अष्ठ उद्देशक :

इसमें विद्वानों (महात्माओं) ने जिन नियमों का प्रतिपादन किया है उनका पालन करता हुआ संयमी मुनि अंतिम समय में समाधिपूर्वक अपने शरीर को त्याग करें।

त्रिविध मरण

भक्त (भक्त) (परिज्ञा, इंगित मरण, पादपोपगमन, मरण) में से किसी एक को प्राप्त करने के लिए तत्पर साधु सर्वप्रथम कषायों की संलेखना करें और अपने शरीर, आहार की मात्रा कम करके तप करके कषायों को छोड़ने का प्रयास करता हुआ यह सोचे की थोड़े दिन और आहार करके संलेखना करेगा।

संलेखना करने को तत्पर साधु प्रशंसा होते हुए देखकर भूख की पीड़ा से या रोग की पीड़ा से मरने की इच्छा न करे, वह जीवन व मरण के प्रति किसी प्रकार आसक्त न हो ओर समभाव रखे और समाधि मरण की इच्छा करने वाले साधु संलेखना करे इसका अर्थ यह है कि ऐसे साधु को यह ज्ञात हो जाए उसका मरण समीप है। संलेखना काल में ही धर्म के साथ भक्त परिज्ञा का सेवन करे।

अर्थ

स्कन्ध - भाग (खण्ड)

उद्देशक : एक अध्ययन में आए हुए नवीन विषय का प्रारम्भ उद्देशक कहलाता है।

रति – पाप में रस

अरति – धर्म में निरसता

पादपोपगमन मरण : पादपोपगमन मरण का अर्थ है : इसमें साधक दूसरों से सेवा नहीं लेता है और न ही दूसरों की सेवा करता है दोनों ही एक दूसरे के पूरक है इसमें साधक एक ही नियत स्थान पर निश्चेष्ट रूप में रहता है। अभिप्राय यह है कि साधक ने अपना अंग रख दिया उसी स्थान पर मरण

तक निश्चल पड़ा रहता है। इंगित मरण में चारों आहारों का त्याग किया जाता है।

संलेखना – प्रतिज्ञा : साधु दीक्षा ग्रहण करने के बाद कुछ प्रतिज्ञा करता है कि वह न तो जीने की आकांक्षा करे न मरने की इच्छा करें। जीवन मरण में आसक्त न हो जैसे – बारह वर्ष की संलेखना की विधि इस प्रकार है।

प्रथम चार वर्ष तक – कभी उपवास, कभी बेला, तेला, पचोला व अन्य तप करता है। द्वितीय चार वर्ष में उक्त प्रकार से तप करे जिसमें दो वर्ष तक एकान्तर करता है तथा 11 वें वर्ष में प्रथम 6 माह तक उपवास व बेला तप करता है 12 वें वर्ष में के अंत में लगातार आयंबिल तप करता है।

जो साधु अपनी शक्ति के अनुसार विविध या चतुर्विध आहार का त्याग करके सभी प्राणियों से क्षमा याचना करके समाधि की ओर प्रवृत्त हो। यहां पर कोई उपसर्ग हो तो भी सहन करते हुए समभाव की भावना रखे और अपने सम्बन्धियों की ओर अग्रसर न हो।

यदि चींटी, सर्प, सिंह आदि जानवर साधु का माँस भक्षण भी करे तो भी वे साधु उसको साफ न करें और वे सबके साथ समभाव का व्यवहार करें।

संक्षेप में यह कहा जा सकता हैं कि :

1. संलेखना के बाह्य और अन्तः दोनों रूप को जानकर हेय का त्याग करें।
2. दीक्षाग्रहण करने के बाद सभी कार्य क्रम से पालन करते हुए शरीर असमर्थ होने पर शरीर विमोक्ष को जानना चाहिए।
3. समाधिमरण के लिए तत्पर साधु कषाय व आहार की संलेखना करें।
4. संलेखना करने के बाद साधु को कोई रोग हो, किसी का आतंक, उपद्रव व उपसर्गों को समभाव से सहन करें।
5. जीवन व मरण में समभाव रखे।
6. ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप, ब्रह्मचर्य समाधि के इन पाँच अंगों का अनुसरण करे।
7. रागद्वेष, मोह–ममता, लालच (लोभ) आदि से दूर रहे।

नवाँ अध्ययन (उपधान)

इस अध्ययन में आचार्य सुधर्मा स्वामी ने जम्बु स्वामी को भगवान महावीर ने दीक्षा लेकर विहार किया उस विषय में जो सुना है वह बता रहे है। भगवान ने दीक्षा के समय अनमने मन से देवदूष्य को रखे हुए संलेखना की सर्दी से शरीर को नहीं ढकेंगे।

भगवान ने करीब तेरह वर्ष तक वस्त्र को बदन पर रखे लेकिन ऐसा कहा गया है व साहित्य में अंकित है कि आधा वस्त्र ब्राह्मण को दे दिया और आधा स्वतः कन्धे से गिर गया। आधा वस्त्र ब्राह्मण को देना उक्त वर्णनों में से सही प्रतीत नहीं होता। अध्ययन 8 में संलेखना में स्पष्ट किया कि समाधिमरण के पूर्व वह न तो सहायता लेगा और न ही सहयोग देगा। ब्राह्मण की याचना करने पर करूणा वश भगवान ने अर्द्धवस्त्र दिया।

भगवान ईर्या समिति के साथ अपने आप पर सावधानी पूर्वक गमन करते थे और उनका ध्यान सीधे मार्ग पर होता हे। ऐसे समय में बच्चों ने महावीर को पत्थर मारे, चींटी, जानवरों के शरीर को नोचा, ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए मौन रहे और वे केवल संयम व मोक्ष मार्ग पर तत्पर रहे।

भगवान महावीर ने जो कुछ कहा वे चलते रहे। कोई वंदना भी करते तो भी वे मौन रहते। भगवान एकान्त सेवी थे परन्तु कभी–कभी उनको विवशतावश ऐसे स्थान पर रहना पड़ा जहाँ गृहस्थ व तीर्थंकर रहते हो वहां पर स्त्री मैथुन के लिए प्रस्तुत करे तो उसे स्वीकार नहीं करते थे।

भगवान गृहस्थ से दूर रहते थे।

भगवान अनार्य देश में गए तब भी अनार्य लोगों ने अनेक कष्ट दिया। कठोर शब्द कहें। फिर भी भगवान हमेशा शांत व समभावी बने रहे।

इस अध्ययन में भगवान की दिनचर्या का वर्णन किया हुआ है।

द्वितीय उद्देशक (रहना)

भगवान महावीर कभी सूने घर से सभा, प्याऊ, दुकान, धर्मशाला,

बगीचे में बने हुए मकान, किसी नगर में, शमशान में, कभी सूने मकान में, कभी वृक्ष के नीचे रहते थे, अपना तप करते थे वे हमेशा अपनी समाधि के बारे में सोचते।

महावीर भगवान के मन में निद्रा का प्रमाद न था, वे जानते थे कि निद्रा संसार भ्रमण का कारण है।

यदि कभी निद्रा का कारण बनता तो शीतकाल की रात को अपने स्थान से बाहर घूम कर वापस आने के बाद पुनः ध्यान में स्थिर हो जाते थे।

इस प्रकार महावीर भगवान ने आचरण किया, और मोक्षार्थी पुरूष को उनका अनुसरण करना चाहिए। यह बात सुधर्मा स्वामी ने अपने शिष्य जम्बु स्वामी को कही।

तृतीय उद्देशक

(परिषह व उपसर्ग)

महावीर भगवान तृष्ण, शीत, उष्ण, स्पर्श, दंश मच्छर का परिषह व अनेक उपसर्गों को समभावपूर्वक सहन करते थे।

लाढ़ देश में विचरते समय भगवान महावीर को कई उपसर्ग आए। अनार्य लोग भगवान को मारते थे, कुत्ते उन्हें काटते थे, उन पर टूट पड़ते थे लेकिन भगवान बेफिक्र विचरे।

भगवान ने मन, वचन व काया से सभी प्राणियों को दण्ड देने का त्याग किया था और अपने शरीर की ममता त्याग दी अतः कर्मों की निर्झरा के लिए हर उपसर्ग को समभाव पूर्वक सहन करते थे।

चतुर्थ उद्देशक

(तपस्या का वर्णन)

महावीर भगवान हमेशा ऊनोदरी तप करते थे। उन्हें किसी प्रकार का रोग नहीं था, यदि कोई व्याधि भी होती थी तो उसकी निवृति के लिए औषधि की कभी इच्छा नहीं की।

महावीर जानते थे कि ओदारिक शरीर अशुचिमय है, किसी प्रकार से इसकी शुद्धि नहीं हो सकती वे वमन, तैलादि, शरीर का मर्दन, स्नान, दातुन आदि किसी प्रकार से इस शरीर की परिचर्या नहीं करते थे।

भगवान इन्द्रियों के विषय में विरक्त होकर अल्प भाषी होकर विचरण करते थे।

चातुर्मास के अतिरिक्त आठ माह में शरीर चलाने के लिए प्रायः सूखे चावल, बोरकूट, कुलत्थी आदि नीरस आहार करते थे। इन्हीं दिनों में कभी वे 15 दिन, 1 माह, 2 माह व 2 माह से अधिक 6 माह तपस्या करते थे। इस प्रकार उनके मन में कभी आहार की इच्छा नहीं करते। अर्थात् भगवान नित्य भोगी नहीं थे। वे कभी दूसरे दिन, तीसरे दिन, चौथे–पांचवे दिन आहार करते थे।

पदार्थ के हेय व उपादेय को जानकर भी महावीर भगवान ने छद्मस्थ अवस्था में न पाप किया, न कराया और न ही अनुमोदना की।

रूखा व सुखा जो भी भगवान को आहार में मिल जाता उसमें सन्तोष करते थे।

भगवान अकषायी थे। कषाय के कर्मों के उदय होने से उन्होंने कभी भी किसी ओर तिरछी आँख से नहीं देखा।

भगवान संसार के सभी प्राणियों के प्रति रक्षा का भाव, दया का भाव का प्रवचन देते थे।

भगवान को संसार की असारता का ज्ञान था और आत्म शुद्धि द्वारा मन, वचन व काया के योगों को अपने वश में रखते तथा मोह, लोभ, राग, द्वेष, क्रोध आदि कषायों को दूर करते हुए भगवान हमेशा शांत रहते।

महावीर भगवान ने उपरोक्त विवरण के अनुसार अपने जीवन को बनाया, पालन किया, आचरण किया। इसलिए अन्य विवेकी पुरूष को इसी प्रकार आचरण करना चाहिए जिससे मोक्ष मार्ग की ओर प्रदत्त हो सके।

(2) सूत्र कृतांग सूत्र

इसका दूसरा नाम सूयगडांगसूत्र भी है। इस सूत्र में दार्शनिक साधनात्मक बिन्दुओं को दर्शाया गया है। जिसमें जैन दर्शन सिद्धान्त की सामाजिक स्थापना की ओर साधना मार्ग पर आने वाले कष्टों को दूर कर सहिष्णुता पर बल दिया है। धर्म चर्चा करते हुए दुराचार से सदाचार की ओर प्रेरित होने का उल्लेख तथा ज्ञान, दर्शन, चारित्र की पालना करने का विधान प्रतिपादित है। यह सूत्र भेद, अभेद को स्पष्ट करता है और इसको समझने के लिए भगवान महावीर के अनेकान्तवाद को समझना होगा। एकान्तवाद व अनेकान्तवाद का विरोध स्वतः स्पष्ट होता है। ऐसी स्थिति में यह सूत्र अनेकान्तवाद नयवाद अपेक्षाकृत या पृथकीकरण करके विभाजन कर किसी तत्व द्वारा सत्य के बारे में जानना भी ठीक रहता है। इस सिद्धान्त को बौद्ध ने विभाज्यवाद माना है और विभाज्यवाद कुछ मर्यादित क्षेत्र में प्रचलित था जबकि भगवान महावीर का अनेकान्तवाद का क्षेत्र व्यापक रहा है। जैसे जीव है या अजीव है, सोना अच्छा है या जागना अच्छा है, जीव कितने प्रकार के है आदि इन सबका वर्णन है। तत्कालीन अन्य दार्शनिक विचारों का निराकरण करके स्वरूप प्ररूपणा का, भूतवादियों का निराकरण

करके आत्मा का पृथक अस्तित्व बनाया है। इस सूत्र में श्रुतकन्ध और 23 अध्याय है। इसमें 180 क्रियाएँ, 84 अक्रियावादी, 67 अज्ञानवादी आदि विषय वस्तु का वर्णन है। इसमें सभी मिलाकल कुल 41750 श्लोक है।

(3) स्थानांग (ठाणांग) सूत्र

इस सूत्र को ठाणांग सूत्र भी कहा जाता है इस ग्रन्थ में सत्य की स्थापना की गई है तथा इसमें आत्मा, पुद्गल ज्ञान, नय और प्रमाण आदि विषयों का उल्लेख है। इस ग्रन्थ का निर्माण वीर निर्वाण की छठीं शताब्दी माना गया है क्यों कि इसमें कुछ घटनाओं में छठीं शताब्दी का भी उल्लेख है। कुछ अंशों को छोड़कर सब प्राचीन है। सूत्र के चौथे अध्याय में चार प्रकार के सत्य की स्थापना की जिसमें प्रतिमा, देरासर (मंदिर) और पांचवें अध्याय में पांच प्रकार के संमकित पर बल दिया है और दसवें अध्याय में दस प्रकार के सत्य बताए है जो शरीर से संबंधित सत्य है और उसमें भी जिन प्रतिमा प्रमुख है। इस सूत्र में गणितानुयोग से लेकर चारों अनुयोगों का वर्णन है। इसमें संख्या 1 से 10 तक भिन्न–भिन्न पदार्थों का वर्गीकरण है, का वर्णन है। इसकी शैली विशिष्ठ है। इसमें सभी मिलाकर कुल 42050 श्लोक है।

(4) समवायांग सूत्र

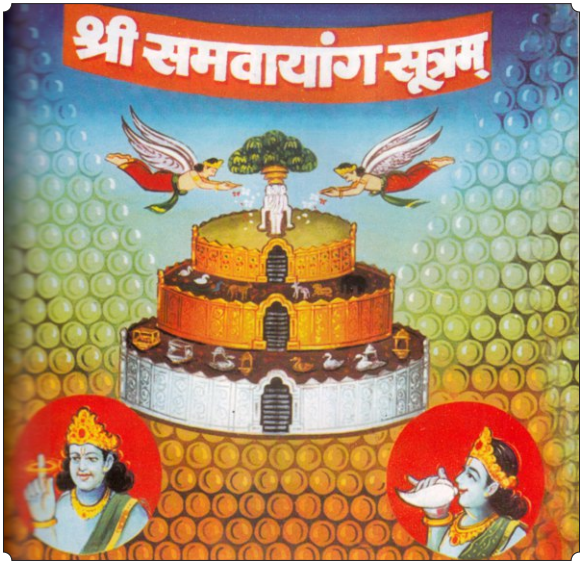

यह सूत्र आगम साहित्य का एक प्रमुख ग्रन्थ है। जैन धर्म के इतिहास के परिवेश में जिन सूत्रों एवं संदर्भो की उपयोगिता आज भी निर्विचार है यह एक समुद्र कोष है जिसमें कई वैज्ञानिक संभावना जन्म ले सकती है इसमें वर्णित भौतिकी, जैविकी, भौगोलिकी की वैज्ञानिकता एवं उपयोगिता निर्विचार है। जिसमें वर्तमान चौबीसी के तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, प्रतिवासुदेव तरेसठ महापुरूषों का वर्णन है।

इसमें संख्या 2 से 1000 तक व बाद में 150, 200, 300, 400, 500 व कोटि–कोटि संख्या तक कौन–कौन से पदार्थ है, उनका वर्णन है, इसमें कुल 5442 श्लोक है।

(5) भगवती सूत्र

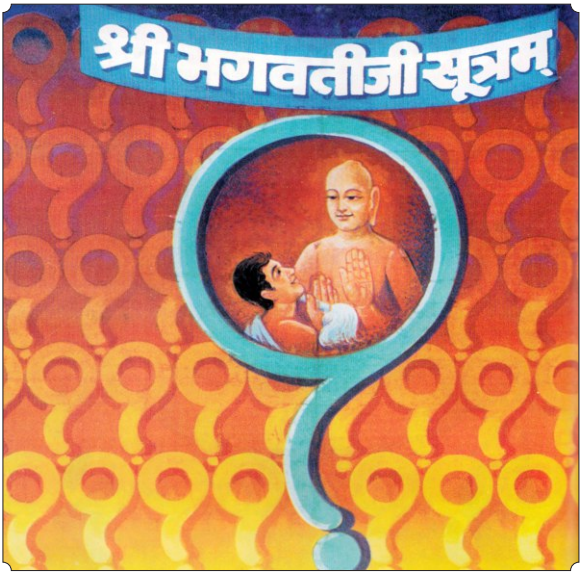

यह सूत्र आगम पाठ का मूल सूत्र है। इसको व्याख्या प्रज्ञाप्ति सूत्र भी कहते है। यह दार्शनिक उपदेश का बहुत बड़ा सूत्र है। जिसमें मुख्य रूप से भगवान महावीर व उनके शिष्य श्री गौतम के बीच संवाद का वर्णन है। इसके अनेक प्रश्नोत्तर में नय प्रमाण आदि कई दार्शनिक विचार है। वैसे देखा जाए तो चारों अनुयोगों का विश्लेषक पृथक–पृथक सूत्रों में है लेकिन भगवती सूत्र में सभी का समावेश हो गया है। यह लिखना भी अनुपयुक्त न होगा कि यह सूत्र सभी दृष्टि से रत्नों का खजाना है। यदि किसी को जैन दर्शन के बारे में जानने की जिज्ञासा है तो इस सूत्र का अध्ययन से ज्ञात हो सकता है। इसमें कुल 57442 श्लोक है।

सर्व आगमों में सबसे ज्यादा विस्तृत प्रमाण वाले इस आगम में सर्वज्ञ कथित अनेक विषयों का व्यापक और गंभीर वर्णन है। देव अधिष्ठित यह आगम है। श्री भगवती सूत्र को जयकुंजर हाथी की उपमा दी है। जिस तरह जयकुंजर हाथी के सामने अन्य कोई जानवर टिक सकता नहीं उसी

तरह भगवती सूत्र के समान अन्य कोई शास्त्र नहीं आते। इस आगम का दूसरा नाम संस्कृत में व्याख्या प्रज्ञप्ति और प्राकृत में विवाह प्रज्ञप्ति है। जीवन में एक बार गुरू मुख से यह आगम सूत्र अवश्य सुनना चाहिये।

श्री गौतम स्वामी द्वारा पूछे हुए 36000 प्रश्नावली का संग्रह है। जड़ का हो या जीव का हो, देव संबंध हो या मनुष्य संबंधी हो, पुद्गल का हो या पदार्थ का हो, द्रव्य का हो या पर्याय का हो, ऐसे विविध प्रश्नोत्तरों को गुरू गौतम ने पूछा जिनके उत्तर प्रभुवीर ने दिये। उपरोक्त उत्तम संग्रह ग्रंथ यानि भगवती सूत्र, इस आगम में कई गणधर, देव, श्रावक, श्राविका, जैन–अजैन वगैरह द्वारा पूछे हुए प्रश्नों का भी उत्तर है।

इस ग्रंथ में गर्भ में जीव की उत्पत्तिकाल–स्थिति का भी वर्णन है। माता का रूधिर और पिता के वीर्य से जीव की उत्पत्ति होती है। अशुचि से भरी भयंकर अंधकारवाली अधेरी कोठड़ी जैसे गर्भ में उल्टे मस्तक के जीव रहता है। गर्भ में रहा हुआ जीव मुख से आहार करता नहीं लेकिन पूरा शरीर से आहार लेकर शरीर का अंग–उपांग बनाता है। शरीर का विकास करता है। गर्भ में रहा जीव निहार करता नहीं, अतिशय वेदना भोगता है। उत्कृष्ट गर्भकाल 24 वर्ष का है। एकज गर्भ में 12 वर्ष रहता है और फिर मरकर वो ही गर्भ में उत्पन्न होकर दूसरा 12 वर्ष रहता है।

इन्द्र महाराजा का भी वर्णन बताया है। इन्द्र की आत्मा भवि होता है। सम्यग्दृष्टि होता है। अतुलबली इन्द्र महाराजा होता है आंख की भायण पर 32 नाटक करते है। आंख के पलकारा में अपने मस्तक का चुरेचुरा कर दे फिर जैसा है वैसा कर देते है। अपने को खबर भी न पड़े। वेदना भी न होती है। इन्द्री सावद्य भाषा बोलते या निरवद्य भाषा। जो मुख आगे हाथ या रूमाल रखकर बोलते है तो निरवद्य भाषा और रखे बिना बोलते हो तो सावद्य भाषा बोलते है।

भव्य–अभव्य–जातिभव्य जीव की समझ भी दी है। सभी ही भवि जीव मोक्ष में जाते नहीं क्योंकि भवि जीव होने के बाद आत्मा को तारने की उत्तम सामग्री की प्राप्ति न होने से मोक्ष में जाते नहीं।

सिंह अणगार का हृदय–पट खोलने का करूणा से भरा वर्णन है। आंसु तीन प्रकार के है। लगे हुए पाप पर पश्चाताप के आंसु, दीन–हीन के प्रति करूणा के आंसु, पुद्गल–पदार्थ, स्वजन–संबंधी के प्रति राग के आंसु है। राग में बहाये आंसु, केवल पानी की बुंद ही है लेकिन दीन–हीन के प्रति बहाये करूणा के आंसु, देव–गुरू के प्रति भक्ति में विरह के आंसु, पाप के पश्चाताप के आंसु मोती की माला है।

तुंगीया नगर के श्रावकों का, जमाई जमाली का, तामली तापस आदि का बढ़िया वर्णन है। इस पवित्र आगम को जीवन में एक बार गुरू मुख से सुनना चाहिये। आचार्य देवश्री धर्मगुप्त सुरीश्वरजी महाराजा के श्रीमुख से यह ग्रंथ का श्रवण करते वक्त पैथडशा मंत्री ने गोयमा शब्द का 1–1 सोना मोहर से पूजन करते ज्ञान भक्ति की थी। प.पू.आ. देवश्री सोमसुंदर सूरीश्वरजी म.सा. के श्रीमुख से आगम का श्रवण करते–करते संग्राम सोनी हर एक गोयमा शब्द पर 1 सोनामोहर, उनकी माताजी आधा सोना मोहर और उनकी धर्मपत्नी सुश्राविका 41 सोना मोहर चढ़ाकर पूजन करते थे, ज्ञान की भक्ति करते थे।

'विषयकाले जिनबिंब जिनागम भवियणा कु आधारा' विषयकाल में प्रत और प्रतिमा, अक्षर और आकार, जिनबिंब और जिनागम भवसमुद्र पार करने का उत्तम साधन आधार है। आज के पंचम आरे में विषयकाल में यह जिनेश्वर परमात्मा, प्रभु का शासन, प्रभु के अनमोल वचन ना मिले होते तब अपनी दशा क्या होती ? 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम में धर्म विच्छेद समय अज्ञान अंधकार में भटकते जीवों जैसी दशा होती। इसलिए ही पुद्गल, परिवार, पैसा आदि से प्रेम छोड़कर प्रत और प्रतिमा से प्रेम करें। उनकी भक्ति आत्मा को मोक्ष मंजिल तक ले जाती है।

श्री भगवती सूत्र के मूलश्लोक 15751, उसके ऊपर 3114 श्लोक प्रमाण चूर्णि मिलती है और नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरी महाराजा की रची हुई 18,616 प्रमाण वृत्ति–टीका मिलती है।

श्री भगवती सूत्र 2,88,000 पद प्रमाण है।

(6) ज्ञातृ धर्मकथांग सूत्र

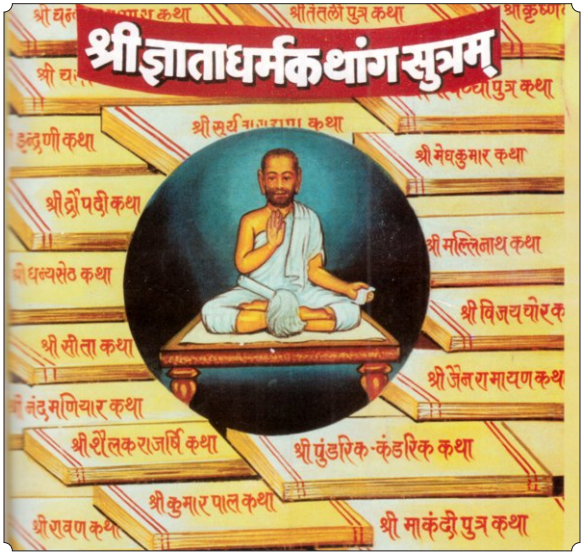

(ज्ञातासूत्र) इस सूत्र में किसी भी वस्तु विषय को समझने के लिए कुछ कथाएं देकर उपदेश दिया गया है। जैसे इस सूत्र के पांचवे अध्ययन में सेलकाचार्य 500 शिष्यों का पुण्डरिक पर्वत पर मोक्ष हुआ। इस पर्वत को पुण्डरिक पर्वत क्यों कहते हैं – ऋषभदेव भगवान के प्रथम शिष्य पुण्डरिक स्वयं का इस स्थान पर मोक्ष हुआ, उस समय से इस पर्वत को पुण्डरिक पर्वत कहा जाता है। इसी सूत्र में कहा है कि द्रौपदी ने श्री कपिल पुर में जिन मंदिर में जाकर पूजा की तथा श्री नेमिनाथ गिरनार पर मोक्ष गये यह सुनकर पांचों पाण्डवों का भी शत्रुंजय पर्वत पर मोक्ष हो गया। यह धर्मकथानुयोग से सम्बन्धित है तथा इसमें कुल 9200 श्लोक है।

श्री ज्ञाता धर्मकथा प्रथम श्रुतस्कंध के अध्ययन के नाम इस प्रकार है। 1. उत्क्षि प्रशात 2. संधारक ज्ञात 3. अंडक ज्ञाता 4. कूर्मज्ञात 5.सेलक ज्ञात 6. तुंबक ज्ञात 7. रोहिणी ज्ञात 8. मल्ली ज्ञात 9. माकंदी ज्ञात 10. चंद्रमस ज्ञात 11. दाव द्रवज्ञात 12. उदक ज्ञात 13. मंडुकल ज्ञात 14.तेतली ज्ञात

15. नंदीफल ज्ञात 16. अपरकंका ज्ञात 17. आकीर्ण ज्ञात 18. सुंसमा ज्ञात 19. पुंडरीक ज्ञात।

बालजीवों को धर्म मार्ग पर चढ़ाने के लिए बोधदायक धर्मकथा का संग्रह याने ज्ञाताधर्मकथा सूत्र, ज्ञाताधर्म कथानुयोग ग्रंथ में पहले साढ़े तीन करोड़ कथा थी। दो श्रुतस्कंध में विभाजित की थी। प्रथम श्रुतस्कंध में 1 अरब 21 करोड़ 50 लाख धर्मकथा थी। दूसरे श्रुतस्कंध में 1 अरब 25 करोड़ धर्मकथा थी। अभी वर्तमान में केवल 19 धर्मकथा ही उपलब्ध है।

श्री मल्लिनाथ भगवान, मेघकुमार, धन्यसेठ, पावच्चा पुत्र, शेलक राजर्षि, विजय चोर, द्रौपदी, सुषमा, पुंडरीक, कंडरीक आदि महापुरूषों के सुंदर जीवन चरित्र वर्णन है।

राजगृही नगरी में धर्मधन से समुद्र धन के सार्थवाह बसते थे। श्रेष्ठि की उजिता, रक्षिता, भक्षिता, रोहिणी नाम से 4 पुत्रवधुएं रूपवान, शीलवान और सुसंस्कारी थी। एक बार 4 पुत्रवधुओं की बुद्धि चतुराई की परीक्षा के लिये धन सार्थवाह 4 वधुओं को शालि के 5–5 दाने देते है। प्रथम वधु उजिता ने 5 दाने को सामान्य गिनकर फेंक दिये, रक्षिता ने सोचा पिता जी ने जो 5 दाने दिये है उसके पीछे कोई कारण होगा फिर से मांगे तो क्या दूंगी ? ऐसा सोचकर डिब्बे में रख दिये।

भक्षिता ने धान के दाना है ऐसा समझकर खा गई और सबसे छोटी बहु रोहिणीमन में सोचती है कि पिताजी के 5 दाने देने के पीछे कोई राज होगा, बिना वजह पिताजी देते नहीं। चतुर बहु रोहिणी ने 5 दाने को खुद के पियर खेती के लिये भेज दिये। थोड़े समय के बाद धन सार्थवाह ने 4 बहुओं को बुलाकर 5 दाने फिर मांगे। प्रथम बहु उजिता ने कहा कि 5 दाने को सामान्य समझकर मैंने फेंक दिये थे। यह बात जानकर धन सार्थवाह ने बड़ी बहु को घर की साफ–सफाई का काम सौंपा। दूसरी बहु रक्षिता ने डिब्बे मंगाकर उसमें से सुरक्षित रूप से संभाले 5 दाने पिताजी को फिर से दिये, उसकी सुरक्षा में कुशलता देखकर धन सार्थवाह ने रक्षिता को घर की धनसंपति का कारोबार की जिम्मेदारी सौंपी। तीसरी बहु भक्षिता ने बताया

कि पिताजी वह दाने धान के थे, इसलिये वह मैं खा गई थी। यह बाद जानकर धन सार्थवाह ने भक्षिता को भोजन खाने–पीने में कुशलता जानकर भक्षिता को रसोई गृहकी जिम्मेदारी सौंपी। सबसे छोटी बहु रोहिणी के पास जब धन सार्थवाह ने दाने मांगे तब रोहिणी ने कहा कि पिताजी वह दाने को लेने के लिये गाड़े भेजने पड़ेंगे। रहस्य भरी बात समझ में नही आने से धन सार्थवाह को बताते है कि पिताजी आप बिना वजह 5 दाने देते नही। 5 दाने देने के पीछे कोई राज होगा फिर कभी भी आप मांगे तो क्या देना ? ऐसा समझकर मैंने दाने मेरे पियर खेती के लिये बोने के लिए भेज दिया है। बार–बार दाने बोने से अबलख पाक हुआ है इसलिये गाड़े भेजने पड़ेंगे। छोटी बहु की चतुराई जानकर पूरे घर का सभी कारोबार उनको सौंपा।

यह कथा ऐसा बोध देती है कि बहुत जीव पुण्य और पुरूषार्थ से 5 दाने रूपी 5 महाव्रत धारण करते है परन्तु थोड़े परिषहों उपसर्गों के आने से सहन कर सकते नहीं है और अजिता ने सामान्य समझ कर दाने फेंक दिये थे उसी तरह महामूल्य रत्न समान 5 महाव्रतों को छोड़ देते है। कोई बाल जीवों "समय गोयम मा पमायऐ" यह अनमोल सूत्र की महिमा को नहीं समझने में सिर्फ खाने–पीने में, जलसा करने में समय बर्बाद करते हैं और शिथिलाचारी संयम जीवन पालते है और अक्षिता की तरह पुण्य खपा देते है। कोई आत्मार्थ जीव रक्षिता की तरह स्व कल्याण अर्थे परपंचात में पड़े बिना खुद का आत्मा का हित कल्याण इच्छते पांच महाव्रतों का पालन करते है।

कोई उत्तम जीव, महामुनिवरों स्व–पर कल्याण करते उत्कृष्ट रीते 5 महाव्रतों का पालन करते है। जैसे छोटी बहु चतुर रोहिणी ने 5 दाने में से अबलख पाक को पाया। उसी तरह यह उत्तम महामुनी 5 महाव्रत का पालन करते इस लोक में सुख संपत्ति परलोक में सद्गति और अन्त में सिद्धि गति की प्राप्ति करते है। खुद शाश्वत सुख प्राप्त करते है, दूसरों को पालन कर सके ऐसा उत्कृष्ट संयम पालन करते है। संयम जीवन का बोध देती यह

कथा संयमी बोध दीक्षा और बड़ी दीक्षा दोनों लेते समय श्रवण कराने में आती है। ऐसी वैराग्य वर्द्धक, करूणा रस भरपूर बोधदायक अनेक धर्मकथाओं का संग्रह है।

यह ज्ञाता धर्मकथा सूत्र के मूल श्लोक 5450 है उसके ऊपर नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरी कृत्य 3800 श्लोक प्रमाण वृत्ति (टीका) मिलती है। यह सूत्र 5,76,000 पद प्रमाण है।

(7) उपासक दशांग सूत्र

उपासक याने श्रावक, श्रावक के ग्रहण (लेने) का 12 व्रतों का विस्तृत वर्णन है। प्रभु वीर के मुखकमल से 12 व्रत अंगीकार करने वाले 1,59,000 श्रावकों का वर्णन है। उसमें मुख्य 10 श्रावक है उसका सुन्दर वर्णन किया है। आनंद, कामदेव, चुलनी पिता, सुरादेव चुल्लशतक कुंड, कौलिक सक्ल पुत्र, महाशतक, नंदिनी पिता, शालिनी पिता इसीतरह 10 श्रावकों के जीवन चरित्र का विस्तृत वर्णन है। यह दस श्रावक अभी वर्तमान में 4 पल्योपम के आयुष वाले सौधर्म देवलोक में देस हुए है। वहां से च्यवकर महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर संयम स्वीकार कर सकल कर्म का क्षय करके मोक्ष में

जायेंगे। 10 श्रावक के चरित्र से आदर्श श्रावक जीवन जीने का बोध मिलता है।

गौशाला ने श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी को महामाहण, महागोप, महासार्थवाह, महानिर्यातक और महाधर्म की जो महती उपमा दी थी उसका वर्णन भी इस ग्रंथ में वर्णन किया है।

मूल श्लोक 812 है उसके ऊपर से नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरीकृत 800 श्लोक प्रमाण छोटी वृत्ति मिलती है।

(8) श्री अंतगड़ दशांग सूत्र

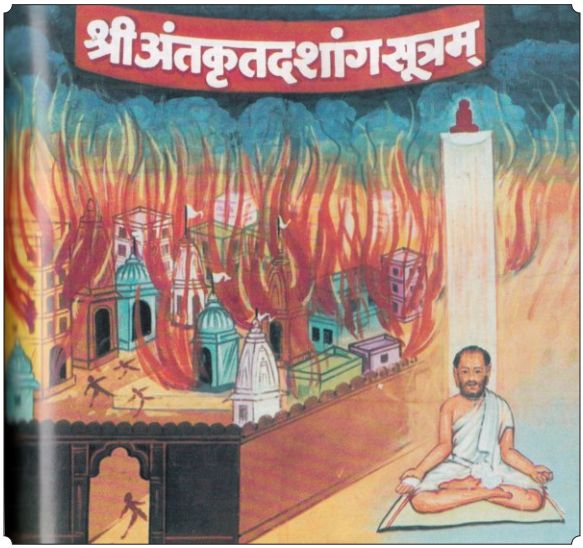

इस सूत्र का दूसरा नाम अंतकृद्दशांग सूत्र है। अंत समय में केवल ज्ञान पाकर अंतमुहूर्त में मोक्ष में गये हुए उसको अंतगड़ केवली कहते है। गजसुकुमाल मुनि, मरूदेवा माता, अंतगड़ केवली बनी हुई श्री कृष्ण की 8 पट्टरानीयाँ, पदमावइ, गोरी, गंधारी, लक्ष्मणा, सुशीमा, जंबुवती, सत्यभामा और रूकमणी, शांब की दो पत्नी इसी तरह अंतगड़ केवली के जीवन चरित्र का वर्णन किया है।

इस ग्रंथ में श्रीकृष्ण वासुदेव के पुत्र कौरह की संख्या भी बतायी है। 10 यादवकुमार के चरित्र भी है। द्वैपायन ऋषि के हाथ से हुई द्वारिका नगरी के नाश का भी वर्णन है। राजा अंधक वृष्णि की रानी धारिणी के पुत्रों ने नेमीनाथ प्रभु के पास दीक्षा लेकर 12 भिक्षुक प्रतिमा के पालन पूर्वक गुणरत्व संवत्सर तप करके शत्रुंजय गिरिराज पर मोक्ष में गये उसका वर्णन है।

श्रेणिक महाराजा की 23 रानियों द्वारा की हुई तपश्चर्या आदि को भी यहां स्थान दिया है। रानी महासेन कृष्णा ने प्रभु उपस्थिति में वर्धमान तप किया था। 17 साल का संयम पर्याय पालकर गुरूणी आर्या चंदनबालाजी की आज्ञा लेकर 1 मास का अनशन कर मोक्ष में गये थे।

इस सूत्र के मूल श्लोक 850 है और नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरी कृत 400 श्लोक प्रमाण लघुविवरण मिलता है।

यह सूत्र भी धर्मकथानुयोग पर आधारित है। शत्रुंजय तीर्थ पर उपवास के साथ बैठकर आराधना करके मोक्ष को प्राप्त करना होता है जिसके लिये लोगों के चरित्र का वर्णन है। जैसे – गजसुकुमाल राजा भरत चक्रवती द्वारा शत्रुंजय तीर्थ का संघ व जिन मंदिरों के निर्माण का वर्णन है। इसमें केवली भगवंत का वर्णन है। द्वारिका नगरी का वर्णन का प्रारम्भ इसी सूत्र में हुआ। द्वारिका का नाश, शत्रुंजय पर अधिकार जताना तथा श्रेणिक राज्य की 23 रानियों की तपस्या का वर्णन है। इसमें कुल 1250 श्लोक है।

मूर्तिपूजक समुदाय के पर्युषण पर्व पर कल्पसूत्र का वाचन हुआ। जिसका वर्णन पूर्व के अंक में किया गया और स्थानकवासी समुदाय व तेरापंथ समुदाय के पर्युषण पर्व में अंतकृतदसांन सूत्र का साधु–साध्वी भगवंतों द्वारा वाचन किया जाता है तथा श्रावकों/श्राविकाओं द्वारा श्रवण किया जाता है। साधारण भाषा में इसका नाम अंतगड़दसा सूत्र है। पर्युषण पर्व में इस सूत्र का वाचन हुआ, जिसका सारांश निम्न प्रकार है :–

सर्वप्रथम वाचन व श्रवण करने के पूर्व यह जान लेना चाहिए। अंतकृत

दशा शब्द का अर्थ आचार्य श्री अभयदेव सूरि जी म.सा. ने बतलाया कि जिन महापुरूषों ने भव का अंत कर दिया है वे अंतकृत कहलाते है। उन महापुरूषों का वर्णन जिन दशा में किया गया है। इसको अंतकृत दसा कहा गया है।

इस अवसर्पिणी काल के चौथे आरे में महावीर भगवान के समय में चम्पा नगरी स्थापित थी। वहां पर उसके उत्तर पूर्व दिशा में पूर्णभद्र नाम का चैत्य था वहां पर सुंदर वनखण्ड था। इस नगरी के राजा का नाम कोणिक था। वह प्रभावशाली था उसकी कीर्ति, यश चारों ओर फैला हुआ था। उस समय में महावीर भगवान के शिष्य सुधर्मा स्वामी अपने पांच सौ अनगारों (शिष्यों) के साथ विहार करते हुए आए और वहां पर पूर्णभद्र नामक चैत्य में ठहरे। श्री सुधर्मा स्वामी के आगमन की बात सुनकर वहां की जनता उनके दर्शन वंदन के लिए पहुँची। उनका प्रवचन हुआ।

यहां पर श्री सुधर्मा स्वामी के पट्धर जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा– धर्म को प्रारम्भ करने वाले साधु–साध्वी, श्रावक व श्राविका रूपी चार तीर्थ की स्थापना करने वाले भगवान महावीर ने 'उपासक दशा' नामक 7 वें अंग में आनंद कामदेव आदि दस–दस उपासकों का वर्णन किया जिसको आपसे मैंने (जम्बू स्वामी) सुना है। अतः यह बतलाने की कृपा करावें कि आठवें अंग में (अंतकृत दसा) भगवान महावीर ने किस विषय का प्रतिपादन किया। इस अध्याय में सूधर्मा स्वामी व जम्बू स्वामी के आपसी प्रश्न–उत्तर है। इसलिए यहां प्रश्न उत्तर के रूप में पत्र को प्रस्तुत करेंगे। यहां प्रश्न जम्बू स्वामी पूछते है और सुधर्मा स्वामी उत्तर देते है।

सुधर्मा स्वामी–भगवान महावीर ने आठवें अंग अंतकृतदशाग सूत्र के आठ अर्थ कहे है। जम्बू स्वामी–आठवें वर्गों अर्थों का प्रतिपादन किया तो उनके प्रथम वर्ग में कितने अध्ययन बतलाए। तो इसको उत्तर में प्रथम वर्ग में 10 अध्ययन कहे हैं। वे इस प्रकार है : (1) गौतम (2) समुद्र (3) सागर (4) गम्भीर (5) अस्मित (6) अचल (7) कम्पिल (8) अक्षभ (9) प्रसेनजित्त (10) विष्णु कुमार।

इस प्रथम अध्ययन का भाव इस प्रकार है। इस अवसर्पिणी काल के चौथे आरे में ही 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान विचरण करते थे उस समय सौराष्ट्र में द्वारिका नाम की नगरी थी। यह नगरी बहुत सुंदर, कलात्मक, सौंदर्यपूर्ण थी जहां के निवासी सभी प्रकार से सुखी थे। इस नगरी के पास "रेवतक" नाम का पहाड़ था। वहां बड़ा उद्यान था, उद्यान में एक "सुरप्रिय" नाम के यक्ष का प्राचीन यक्षायतन था। इस द्वारिका नगरी के राजा कृष्ण थे। वे लोक मर्यादा के पालक थे। द्वारिका नगरी में समुद्रविजय आदि दस राजा थे और बलदेव आदि पांच महावीर थे। राजा कृष्ण का आधे भारत पर राज्य फैला हुआ थां इस द्वारिका नगरी के अन्धक वृष्णि नाम के राजा थे। इनकी रानी का नाम धारिणी था, सांसारिक भोग के साथ उनके एक पुत्र हुआ उसका नाम "गौतम" था।

उस समय भगवान नेमिनाथ विचरण करने द्वारिका आए तो उनका धर्म प्रवचन सुनने को देवता, मनुष्य व अन्य जीव भी आए। वहां कृष्ण भी पहुँचे वहां गौतम भी आए। भगवान का प्रवचन सुनकर गौतम ने भगवान से प्रार्थना की वे अपने माता–पिता की आज्ञा लेकर दीक्षा लेने आता हूँ। माता–पिता के समझाने पर भी नहीं माने और गौतम ने दीक्षा अंगीकार कर ली। गौतम ने सामायिक आदि 11 अंगों का अध्ययन किया, तप निमित्त उपवास, बेला, तेला, चोला, पचोला, अर्द्धमास, मासखमण आदि भक्ति करते हुए विचरण करते रहें यहां पर प्रथम अध्ययन हुआ। शेष का वर्णन किया जा रहा है। ये सभी अन्धक वृष्णि के पुत्र थे और माता का नाम 'धारिणी' था। इस प्रकार अन्य सभी राजकुमारों का वर्णन भी बनाया गया है। जब गौतम आदि सभी भगवंतों का मोक्ष हो गया।

दूसरे वर्ग में आठ अध्ययन है : (1) अक्षोत्र (2) सागर (3) समुद्र (4) हिमवान (5) अचल (7) धरण (8) पूरण (8) अमिचंद।

इनका भी वर्णन गौतम के समान ही समझा जाना चाहिए।

गौतम आदि अन्य कुमार (10 कुमार) शत्रुंजय तीर्थ पर मास के उपवास कर सिद्ध हुए।

तीसरे वर्ग में इसमें निम्न तेरह अध्ययनों का वर्णन हुआ है :

(1) अनीक सेन (2) अनंत सेन (3) अजित सेन (4) अनिहत रिपु (5) देव सेन (6) शत्रु सेन (7) आरज (8) गज (9) सुमुख (10) दुर्मुख (11) कुपक (12) दारूक (13) अनादृष्टि।

उस समय भद्दिलपुर नाम का एक नगर था वह सभी तरह से परिपूर्ण था, इसके पास श्रीवन का उद्यान था। नगर का राजा जित शत्रु था, उसी नगर में ''नाग'' नाम का एक गाथापति रहता था। वह समृद्धिशाली स्वाभिमानी था जिसका कोई भी अपमान नहीं कर सकता था। उसकी ''सुलसा'' नाम की पत्नी थी। इसके पुत्र अनीकसेन था, वह बहुत ही सुकुमाल व रूपवान था। माता–पिता ने कुमार शिक्षा प्राप्त करने के लिए वहां पर थोड़े समय में ही सभी प्रकार का कला से पारंगत हो गया, समय के अनुसार यौवनावस्था में आए तब माता–पिता ने सभ्य सेठों की बत्तीस कन्याओं का एक दिन में एक साथ विवाह कर दिया।

नाग गाथापति अनिकसेन के लिये प्रति दिन 32 करोड़ का धन दान देते थे। उस समय श्री नेमिनाथ भगवान विचरण करते समय भद्दिलपुर के बाहर श्रीवन नामक उद्यान में पधारे। उनका धर्म प्रवचन सुनने सभी जनता जा रही थी। उस समय अनीकसेन राजकुमार भी गया। भगवान का प्रवचन सुनकर कुमार ने माता–पिता की आज्ञा से दीक्षा अंगीकार करली। दीक्षा पर्यंत उन्होंने सामायिक व चौदह पूर्वो का अध्ययन किया और 20 वर्षों तक छद्म अवस्था में विचरण करते हुए शत्रुंजय पर्वत पर जाकर एक माह के उपवास सहित सिद्ध हुए।

अनीक सेन के भाई अनंत सेन, अजित सेन, अनिहंत रिपु, देवसेन शत्रुसेन–सभी छः भाईयों के माता–पिता एक ही थे। सभी ने दीक्षा ग्रहण की, सभी 20 वर्ष दीक्षा पर्याय व्यतीत करते हुए चौदह पूर्वो का अध्ययन किया और अंत में शत्रुंजय तीर्थ पर सिद्ध हुए। सातवें अध्ययन में बताया कि द्वारिका नगरी के राजा वसुदेव व रानी धारिणी था। उनके पुत्र सारणकुमार था। सारण कुमार ने बहत्तर कलाओं का अध्ययन किया।

भगवान नेमिनाथ का प्रवचन सुनकर कुमार ने दीक्षा ग्रहण की व 20 वर्ष तक दीक्षा पर्याय में रहकर 14 पूर्वो का अध्ययन किया और अंत में शत्रुंजय तीर्थ पर सिद्ध हुए। आठवें अध्ययन में छः सहोदर भाइयों का वर्णन हैं यह छः ही भाई शक्ल, सूरत से एक समान थे उन्होंनें जिस दिन से दीक्षा ग्रहण की तब से (छट्ठ–छट्ठ) का तप करते हुए विचरण करते रहे। एक समय बेले के पारणें के दिन दो–दो की विभक्ति में बट कर द्वारिका नगरी में गोचरी (भिक्षा) प्राप्त करने के लिए आये।

इन तीनों समूह में से एक समूह भिक्षा के लिए राजा वसुदेव व रानी देवकी के यहां पहुंचा। रानी ने बड़ी प्रसन्न होकर उनका स्वागत किया। वंदन किया और विनयपूर्वक गोचरी वोहराई। तीनों समूहों में विमक्त साधु के अन्य समूह भी रानी देवकी के घर पहुंचे। देवकी ने उनका भी आदर सत्कार सहित दोहराया। हे भगवान! कृष्ण–वसुदेव जैसे महाप्रतापी राजा का द्वारिका नगरी में श्रमण निग्रन्थों का आहार–पानी नहीं मिलता है क्या, जिससे एक ही कुल में बार–बार आना पड़ता है।

देवकी के इस प्रकार का प्रश्न सुनकर साधु–भगवंत कहते हैं कि यहबात नहीं है। हमारा रूप, शक्ल, उम्र आदि एक समान होने के कारण यह संशय हुआ है। हम नाग (गाथापति) व सुलस के पुत्र है। साधुओं (अनगारों) के जाने के पश्चात देवकी के मन में पश्चाताप हुआ और उसको बचपन में पोलासपुर नगर में अतिमुक्तक साधु ने कहा था कि देवकी तुम आठ पुत्रों का जन्म दोगी। जो आकृति में समान होंगे।

यह बात जानकर देवकी भगवान नेमिनाथ के पास पहुँची उन्होंने भी यह बात सत्य होना बताया। उन्होंने कहा कि सुलसा के मरे हुए पुत्र होते थे – हरिणगमेषी देव तुम्हारे पुत्र को सुलसा के पास सुला देते। अति मुक्तक का कहना सत्य है ये सभी पुत्र तुम्हारे ही है। देवकी अपने आप को अघन्य व अपुण्यशाली मानती है। यह सोच रही थी कि उस समय कृष्ण ने आकर चरण–वंदन किया और माता को चिंतित होते देख चिंता का कारण पूछा ? माता ने कहा कि उसने सातपुत्रों को जन्म दिया लेकिन एक भी बालक की

क्रीड़ा नहीं देख पाई तो कृष्ण ने कहा कि वह कोशिश करेगा कि सहोदर छोटा भाई हो। कृष्ण हरिणगमेषी देव की आराधना हेतु तेले की तपस्या करने लगे और देव ने प्रकट होकर मनोरथ पूर्ण होना कहा।

समय के अनुसार एक देव का अवतरण देवकी के गर्भ में उत्पन्न हुआ। समय पूर्ण होने पर देवकी ने पुत्र को जन्म दिया। बालक गज के तालु के बराबर सुकोमल है, इसलिए उसका नाम गजसुकोमल रखा गया। द्वारिका नगरी में सोमिल नाम का एक ब्राह्मण रहता था वह बहुत विद्वान था। उसके 'सोमश्री'; नाम की पत्नि थी – उसकी एक ''सोमा'' नाम की कन्या थी।

एक दिन सोमा राज मार्ग पर आई यहां उसने सोने की एक गेंद देखी, उससे खेलने लगी उसी समय वासुदेव कृष्ण के साथ उधर आए। कन्या की सुंदरता को देखा तो उन्होंने सोमिल ब्राह्मण के घर भेजा और उसकी कन्या का हाथ मांगा और सोमिल ने अपनी कन्या को राजमहल में बिठा दिया। उस समय नेमिनाथ भगवान विचरण करते हुए द्वारिका नगरी पधारे। धर्म कथा सुनने के लिए जन समुदाय जा रहा था और गजसुकुमाल भी गए। वहां प्रवचन सुनकर दीक्षा ग्रहण करने का विचार किया। माता–पिता व कृष्ण के समझाने पर भी गज सुकुमाल नहीं माने और नेमिनाथ जी के पास दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा ग्रहण के बाद उसी दिन भगवान से कहा कि वह **महाराज** श्मशान में जाकर एक रात्री की महाप्रतिज्ञा (भिक्षु प्रतिमा) स्वीकार करने की आज्ञा चाही तो स्वीकृति मिलने पर वे श्मशान में पहुंचे वहां पर कार्योत्सर्ग करने के लिए उचित स्थान देखकर एक पृद्गल (पदार्थ) को देखते हुए रात्री को महा प्रतिज्ञा स्वीकार कर ध्यानस्थ हो गए, उधर से सोमिल ब्राह्मण गुजरा तो गजसुकुमाल को ध्यानस्थ देखा तो पूर्व जन्म का बैर होने के कारण उसने सोमा को छोड़कर यहां पर ध्यानस्थ हो गए, बदला लेने के उद्देश्य से उसने देखा कि वहां पर कोई नहीं है तो पास से तालाब की गीली मिट्टी लाकर साधु के सिर पर रखकर उस पर अंगारे रखे पीड़ा बहुत हुई लेकिन उन्हें मन में सोमिल के

प्रति कोई द्वेष नहीं था और समभाव रखते हुए सब दुखों को सहन करते हुए गज सुकुमाल मोक्ष को प्राप्त हुई।

इसी प्रकार दुर्मुख और कूप दारक दोनों का वर्णन जानना चाहिए। इन दोनों के पिता का नाम बलदेव एवं माता का नाम धारिणी था। इनका सारा वर्णन सुमुख की तरह है। केवल दारूक कुमार का वर्णन सुमुख के समान है, केवल पिता का नाम वसुदेव व माता का नाम धारिणी था। इसी प्रकार अनादृष्टि कुमार का वर्णन है पिता का नाम वासुदेव व माता नाम धारिणी था।

चौथे वर्ग में दस अध्ययन है – उनके नाम इस प्रकार है

(1) जाली (2) मयाली (3) उवयाली (4) पुरूषसेन (5) वारिसेन (6) प्रद्युम्न (7) शाम्ब (8) अनिरूद्ध (9) सत्यनेमि (10) दृढ़नेमि।

जाली, मयाली, उबयाली, पुरूष सेन, वारिसेन के माता का नाम धारिणी व पिता वसुदेव थे। प्रद्युम्न के पिता का नाम कृष्ण व माता का नाम रूक्मिणी राधा था। शाम्बकुमार के पिता कृष्ण व माता जाम्बवती थी अनिरूद्ध के पिता का नाम प्रद्युम्न व माता बैहुर्भी थी। इसी प्रकार सत्यनेमि व दृढ़ नेमि के पिता का नाम समुद्र विजय व माता का नाम शिवा देवी था। जालि कुमार का विवाह 50 कन्याओं के साथ हुआ उस समय नेमिनाथ भगवान वहां पधारे उनका प्रवचन सुनकर उन्होंने दीक्षा ग्रहण की। उन्होंने बारह अंगों का अध्ययन किया। 16 वर्ष तक दीक्षा पर्याय पाली। और बाद में शत्रुंजय पर्वत पर सिद्ध हुए। इसी प्रकार अन्य कुमार को जानना चाहिए।

पाँचवा वर्ग में निम्न दस अध्ययन है : (1) पद्मावती (2) गौरी (3) गांधारी (4) लक्ष्मणा (5) सुसीमा (6) जांबवती (7) सत्यमामा (8) रूक्मिणी (9) मूल श्री (10) मूलदत्ता

श्री सुधर्मा स्वामी जम्बू स्वामी से कहते हैं कि उस काल में द्वारिका नाम की नगरी थी वहां का राजा वसुदेव था उनकी रानी का नाम पद्मावती था। जो सुंदर थी। उस समय नेमिनाथ भगवान विचरण करते हुए पधारे।

भगवान का आगमन को जानकर कृष्ण वासुदेव पद्मावती सहित दर्शन के लिए गए। दर्शन लाभ लेकर पद्मावती बहुत प्रसन्न हुई और धर्म प्रवचन सुनकर अन्य सभी लौट गए। तब कृष्ण वासुदेव ने भगवान से पूछा कि द्वारिका नगरी किस प्रकार नष्ट होगी। तब भगवान ने कहा कि नगरीका विनाश सुरा–मदिरा, अग्नि, और द्वीपायन ऋषि के कारण होगा। जब कृष्ण वासुदेव ने सुना तो उन्होंने सोचा कि जाली, मयाली आदि राजकुमारों को धन्य है। जिन्होंने स्वयं ने सब छोड़ दिया।

कृष्ण विचारमग्न हो गए तो भगवान ने कृष्ण से पूछा कि वे काल कर कहां जाएंगे तो उन्होंने कहा कि सुरा–अग्नि व द्वीपायन ऋषि के श्राप के कारण द्वारिका नाश हो जाने पर व माता–पिता के विहिन होने पर राम बलदेव के साथ पाण्डुराजा के पुत्र युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव के समीप पाण्डु मथुरा की और जायेंगे और पीताम्बर शरीर को ढककर सो जाओंगे तब जरा कुमार ानवर समझकर तीर चलाएगा तब तुम्हारी मृत्यु होगी और काल के बाद वालुका प्रभ नामक तीसरी पृथ्वी में उत्पन्न होगे – यह सुनकर कृष्ण विचारमग्न हो गए। कृष्ण को विचारमग्न होते देखकर भगवान ने कहा कि तुम विचारमत करो, तुम तीसरी पृथ्वी से निकल कर आगामी उत्सर्पिणीकाल में अमम नाम के बारहवें तीर्थकर बनोगे और सिद्ध पद प्राप्त करोगे। अपना भविष्य सुनकर कृष्ण प्रसन्न हुए और भगवान को वंदन कर अपने भवन लौटे और उन्होंने एक घोषणा करवा दी कि मदिरा, अग्नि व द्वीपायन ऋषि के श्राप से यह नगरी नष्ट हो जाएगी इसलिए कोई भी व्यक्ति चाहे वह सेठ हो, राजा हो, साधारण सदस्य हो दीक्षा लें ले और उनके दीक्षा महोत्सव समारोह वे स्वयं करेंगे।

भगवान नेमिनाथ का धर्म प्रवचन सुनकर पद्मावती प्रसन्न हुई थी और कृष्ण की घोषणा सुनकर पद्मावती कृष्ण वासुदेव के पास जाकर दीक्षा लेने की स्वीकृति चाही, कृष्ण वासुदेव ने सहर्ष स्वीकृति देते हुए स्वयं ने भगवान नेमिनाथ के पद्मावती को शिष्या के रूप में भिक्षा देता हूँ। भगवान की आज्ञा प्राप्त होकर दीक्षा अंगीकार की दीक्षा पश्चात सामयिक व अंगों का अध्ययन

के साथ–साथ सभी प्रकार का तप किया और बीस वर्ष तक विचरण करते हुए एक माह के उपवास के साथ सिद्ध पद प्राप्त किया।

इस प्रकार गोरी, गान्धारी, लक्ष्मण, सुशीला, जांबवनी, सत्यभामा और रूकमणी का समान रूप में जानना चाहिए। ये सभी रानियाँ कृष्ण वासुदेव की रानियां थी। इसी प्रकार कृष्ण वासुदेव व जाम्बवती के पुत्र ''शाम्ब'' नामक पुत्र थे उनकी रानी मुल श्री।

छठें वर्ग में 16 अध्याय है जिसमें निम्न महापुरूषों का वर्णन है :

(1) मकाई (2) किंकम (3) मृद्गर पाणि (4) काश्यप (5) क्षेमक (6) धृतिधर (7) कैलाश (8) हरिचन्दन (9) वारत (10) सुदर्शन (11) पुर्णभद्र (12) सुमनोभद्र (13) सुप्रतिष्ठ (14) मेघ (15) अतिमुक्त (16) अलक्ष्य।

श्रेणिक वर्ग : राजगृह नामक नगर था वहाँ का राजा श्रेणिक थे। उस नगर में एक मकाई नाम का गाथापति रहता था जो काफी समृद्धशाली था। उस समय भगवान महावीर वहां पधारे। दर्शन लाभ लेने हेतु जन समुदाय गया। मकाई गाथापति भी दर्शन करने गया। भगवान का प्रवचन सुन मकाई गाथापति को वैराग्य उत्पन्न हुआ और अपना कार्य अपने ज्येष्ठ पुत्र को सुपुर्द कर दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा पश्चात् 11 अंगों का अध्ययन व तप आराधना की। 16 वर्षों तक दीक्षा पर्याय का पालन कर अन्त में विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

अर्जुन अणगार

यक्ष अवशिष्ट राजगृही नगरी का अर्जुन मालाकार 5 माह 25 दिन 1141 स्त्री–पुरूषों, 978 पुरूष 163 स्त्रियों की हत्या करने वाला। जब भगवान महावीर पधारे तो धर्मनिष्ठ सुश्रावक सुदर्शन सेठ दर्शन करने के लिए भगवान के पास उसी मार्ग से गुजरा। अर्जुन मालाकार सेठ सुदर्शन को मारने के लिए लपका, परन्तु यक्ष पराजित हो भाग गया व अर्जुन मालाकार धड़ाम से धरती पर गिर पड़ा। सुदर्शन श्रावक ने सागारी संथारा पाला व देखा कि वह बेहोश पड़ा है।

उपचार किया पूछा तुम कौन ? बोला मैं सुदर्शन श्रावक हूँ सेठ सुदर्शन अपने प्राण धाती हत्यारे को गुणशील उद्यान में भगवान के समवशरण में ही नहीं ले गया अपितु उसे मोक्षगामी बना दिया। अपकारी के प्रति भी उपकार यही श्रावकत्व की पहचान है।

अर्जुन माली दीक्षा लेकर बेले–बेले पारणे व गोचरी हेतु उसी राजगृही नगरी में जाते है, कहीं आहार मिलता है, तो पानी नहीं व कहीं पानी मिलता है तो आहार नहीं, अर्जुन अणगार सोचने लगे ये तो मुझे प्रताड़ित ही कर रहे है, गाली ही दे रहे है, मारपीट ही कर रहे है, मैंने तो इनके पति, पुत्र, भाई, भगिनि, पुत्री, माता व पिता को मारा है – वे एकदम शान्त व समभाव में रहे। इस तरह छः माह में ही कर्मों की सैना को पछाड़ कर निर्वाण प्राप्त कर लिया। सिद्ध, बुद्ध एवं मुक्त हो गये।

क्षमा का अद्भुत उदाहरण संसार में प्रस्तुत किया। धन्य है भगवान महावीर एवं उनके अणकार अर्जुन माली।

इसी प्रकार किंकम गाथापति का वर्णन है वे भी विपुलगिरि पर सिद्ध हुए।

सातवें वर्ग में 1 3 अध्ययन है जिसमें निम्न का वर्णन है :

(1) नंदा (2) नंदवती (3) नंदोत्तरा (4) नंद श्रेणिका (5) मरूता (6) सुमरूता (7) महामरूता (8) मरूदेवा (9) भद्रा (10) सुभद्रा (11) सुजाता (12) सुमनालिका (13) भूतदना।

ये तेरह श्रेणिक राजा की रानियां थी। उस समय राजगृह नाम का नगर था। उसके राजा का नाम श्रेणिक था उसके नंदा नाम की रानी थी। एक दिन भगवान महावीर पधारे। सारी परिषद दर्शन वंदन के लिए गई। भगवान के आगमन को सुनकर नंदा रानी काफी प्रसन्न हुई वह श्री भगवान को वंदन करने गई।

भगवान का उपदेश सुनकर उसको वैराग्य उत्पन्न हुआ और राजा से आज्ञा लेकर दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा पश्चात् 20 वर्ष तक दीक्षा पर्याय पालते

हुए 11 अंगों का अध्ययन किया और सिद्ध को प्राप्त हुई। इसी प्रकार शेष 12 रानियों के भाग का वर्णन भी इसी प्रकार है।

आठवें वर्ग में 10 अध्ययन है जिसमें निम्न का वर्णन है।

(1) काली (2) सुकाली (3) महाकाली (4) कृष्णा (5) सुकृष्णा (6) महाकृष्णा (7) वीरकृष्णा (8) रामकृष्णा (9) पितृसेनकृष्णा (10) महासेन कृष्णा।

उस समय चम्पा नाम की नगरी थी। वहां के राजा का नाम कोणिक था। श्रेणिक राजा की रानी व कोणिक राजा की लघुमाता काली थी। काली ने भी नंदा रानी की तरह दीक्षा ग्रहण की और दीक्षा पश्चात् 11 अंग का अध्ययन किया और उपवास आदि तप करते हुए विहार करती रही। एक दिन काली, चंदना आर्या के पास आकर रत्नावली तप करने की आज्ञा प्राप्त करने आई।

स्वीकृति प्राप्त कर काली रत्नावली तप करने लगी, इसका अर्थ यह है कि एक उपवास पर पारणा, दो उपवास पर पारणा इस प्रकार बेला किया फिर तेला किया, पारणा कर किया। इस प्रकार बढ़ते हुए 16 उपवास तप किया। पारणा करके पन्द्रह दिन की तपस्या पारणा करते हुए घटते हुए से लेकर उपवास किया। यह परिजती 3 माह 12 दिन लगावें। इसमें 84 दिन तपस्या 28 दिन पारणा के होते है। इस प्रकार एक सौ बारह होते हैं।

काली रानी ने 11 अंगों का अध्ययन किया आठ वर्ग दीक्षा पर्याय में व्यतीत किए। अंत में एक माह के उपवास सिद्ध हुए। इस प्रकार नेमीनाथ भगवान के समय में 51 व महावीर भगवान के समय के 39 महापुरूषों व महासतियों के चरित्र का वाचन हुआ।

(9) श्री अनुत्तरोववाई सूत्र

शुद्ध चरित्र का पालन करके अनुत्तर विमान में गये हुए आत्माओं का चरित्र का वर्णन है जिसमें मेघकुमार, अभयकुमार, धन्ना अणगार, शालिभद्रजी, जाली–मयाली, उवयाली आदि 33 उत्तम आत्माओं का जीवन चरित्र बहुत सुंदर रीत से वर्णन है।

विशेष में प्रभुवीर के मुखकमल से जिसकी प्रशंसा की हुई थी वह धन्य महामुनिवर धन्ना अणगार का वर्णन है। काकंदी नगरी के धन्ना श्रेष्ठि ने प्रभु वीर कीवाणी से प्रतिबोध पाकर स्व–परकल्याणकारी, आत्मा को मोक्षगमन कराने वाला, चारित्र जीवन जीने का भाव जगे, पुण्य और पुरूषार्थ से वैराग्यवासित बनकर प्रभुवीर के हस्ते संयम जीव अंगीकार किया। पापकर्म खपाने–आत्म कल्याण करने प्रभु के पास अनुज्ञा लेकर जिन आज्ञा का पालन करते छठवे पाण्यो छठ्ठ पारणे आयंबिल तप करते, उग्र तप के कारण शरीर बिल्कुल हाड़पिंजर जैसा बन गया था। चले तो भी हड्डी की खड़खड़ आवाज आती, उनकी तीव्र तपश्चर्या का भी विस्तृत में

वर्णन है। धन्ना अणगार काल करके अनुत्तर विमान में देव बने, वहां से च्यवकर एक भव करके सकल कर्म का क्षय करके मोक्ष में जायेंगे।

अनुत्तर विमान में देव बने हुए 33 उत्तम आत्माओं का चरित्र है। अनुत्तर विमान में 3 वर्ग है जिसमें प्रथम वर्ग में 10 आत्मा, दूसरे वर्ग में 13 आत्मा और तीसरे वर्ग में 10 आत्मायें देव बने है। ये सभी आत्मा 1 भव करने के बाद सकल कर्म का क्षय करके मोक्ष में जायेंगे। तीसरे वर्ग में रही हुई 10 आत्माओं में से 9 आत्मा की पूर्वभव में माता का नाम भद्रा था।

इस आगम का तीन विभाग और 33 अध्ययन है। इस आगम के मूल श्लोक 193 है। उसके ऊपर नवांगी टीकाकार श्री अभयदेव सूरी महाराजा कृत 100 श्लोक प्रमाण लघुवृत्तित मिलती है। 1,84,32,000 पद प्रमाण यह आगम है।

(10) श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र

108 प्रश्न, 108 अप्रश्न, 108 प्रश्नाप्रश्न का संग्रह याने यह आगम है। अप्रश्न याने नहीं पूछा हुआ प्रश्न।

इस आगम में हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह ये पांच महाव्रत पाप के विषय में विस्तार से वर्णन है और इस पांच महापापों के त्याग रूप प्रणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, ब्रह्मचर्य, परिग्रह व्रत इस तरह पांच महाव्रतों का स्वरूप बहुत ही बढ़िया तरीके से वर्णन किया है।

पूर्वकाल में मंत्र–तंत्र–विद्या अतिशय थे उसकी भी जानकारी इस ग्रंथ में से मिलती है जिसकी अधिष्ठाता देवी होती है, उसको विद्या कहते है और जिसकी अधिष्ठाता देव होते है उसको मंत्र कहते है।

भवनपति देवों के साथ किस तरीके से बात करना वह इस आगम में जानने को मिलता है और भूतकाल और भविष्यकाल को जानने की पद्धति भी आगम में है।

(11) विपाक सूत्र

इस सूत्र का दूसरा नाम विपाक दशा सूत्र भी है। यह आगम दो श्रुतस्कंध में विभाजित किया है। प्रथम श्रुतस्कंध में हिंसादि भयंकर पाप करके उसके फलस्वरूप इस भव और परभव में महादुःख को भोगनवार

महापापी महादुःखी जीवों का चरित्र वर्णन किया है। जबकि दूसरे श्रुतस्कंध में धर्म की उत्तम आराधना–साधना–उपासना करके उसके फलस्वरूप इस भव और परभव में सुंदर सुख को प्राप्त करनार धर्मी जीवों का चरित्र का वर्णन है।

दुःख विपाक : गुरू गौतम स्वामी ने रास्ते में विचरता एक भयानक–करूणा पैदा करें, ऐसा दृश्य देखा। एक चोर को सब इकट्ठे होकर सजा देवें । कोई लकड़ी से तो कोई कोई पत्थर से अलग–अलग तरीके से सब बहुत ही मारते है। चोर की दशा बहुत ही खराब है सख्त मार की वजह से मरने जैसा हो गया है। छूटने के लिये आजीज करता है फिर भी कोई उसको देखता नहीं। उसका कोई सुनता नहीं और ऊपर से ज्यादा और ज्यादा करते है। यह दृश्य देखकर गुरू गौतम का हृदय भांज गया। प्रभु वीर के पास जाकर कहते है, हे प्रभु ! आज मार्ग में एक चोर को सख्त पीटते देखा है। ये चोर जितना दुःखी था जगत में अभी कोई नहीं होगा तब श्रमण भगवान श्री महावीर कर्मविपाक स्वरूप समझाते है, हे गौतम ! इस दुनिया में वर्तमान में मृगापुत्र जैसा महादुःखी आत्मा दूसरा कोई नहीं। यह सुनकर कर्म के विपाक को जानने की जिज्ञासा वाले गुरू गौतम मृगावती रानी के पुत्र मृगापुत्र को देखने जाते है। मृगा पुत्र की दशा देखकर गुरू गौतम के हृदय में हाहाकार मच जाता है।

मांस पिंड पूरे शरीर में से पीप, लहु आदि अशुचि निरंतर निकलती है। शरीर में से अतिशय दुर्गंध आती है। मृगापुत्र की आत्मा प्रतिपल कारमी वेदना को भोग रही है। मनुष्य लोक में मानव भव पाने के बाद भी नरक की वेदना भोगता है। यह दृश्य देखकर गुरू गौतम का दिल करूणा रस से भीना–भीना हो गया है। मन चकडोले चढ़ता है। जीव के हंसते बांधे हुए कर्म रोते हुए भी छूटते नहीं। प्रभु वीर के पास आकर कहते है, हे प्रभु ! साक्षात नरक को देखकर आया हूँ। हे प्रभु ! मृगापुत्र कौनसे कर्म के फलस्वरूप नरक की वेदना भोगता है तब कर्म का स्वरूप समझाते प्रभु गौतम को मृगापुत्र का पूर्वभव कहते है। मृगापुत्र पूर्व भव में इक्काई नामें

राठौड़ था। 500 ग्राम का अधिपति था। 250 साल का आयुष्य था। सत्ता के बल से लोगों को डराता है, धमकाता है। अतिशय क्रूरता आचरता है। अतिशय काम कराके सत्ता का दुरूपयोग करता है। जीवन क्रूर है इतना ही कामी है।

सातों व्यसन में चकचूर होकर महापापों को आचरता है और कर्म का ठगले खड़ा करता है। वहां से मरकर महापाप के फलस्वरूप प्रथम नरक में अतिशय वेदना दुःख भोगता, नरक का जीव बनता है। नरक से मरकर यहां श्रेणिक राजा की मृगावती रानी के कुक्षीसे पुत्र रूपे उत्पन्न होता है। हंसते–हंसते बांधे हुए कर्म रोते भी छूटते नहीं।

बांधे हुए कर्म भोगे बिना छूटते ही नहीं। कर्म के बंधते समय जीव भान नहीं रखता और कर्म के फल जब उदय में आते है तब उहापोह करके दूसरे नये कर्म बांधते है। इस तरह मृगापुत्र (रोह) आ भव के बाद तिर्यंच का भव करेगा, बाद नरक का भव करेगा इस तरह बारम्बार 7 नरक में जायेगा। अनेक प्रकार की यातनायें, पीड़ाएं, दुःखों को सहन करता, पाप के फलनको हल्का करता अनेक छोटे–बड़े भव करके धर्म आराधना साधना करके सफल कर्म का क्षय करके अन्त में मोक्ष में जायेगा।

भयंकर महापापों के फलस्वरूप इस भव और परभव में दुःख प्राप्त करने वाले ऐसा महापापियों के जीवन चरित्र दुःख विपाक प्रथम श्रुतस्कंध बताया है।

सुखविपाक : दूसरे श्रुतस्कंध में उत्तम आराधना–साधना करके पुण्य उपार्जन करके यह भव और परभव में सुख प्राप्त करनार धर्मा जीवों के चरित्र है उसमें सुबाहुकुमार के चरित्र यहां संक्षेप में वर्णन किया है।

सुबाहुकुमार अपार ऋद्धि–सिद्धि के स्वामी है। 500 रानियों के स्वामी है। 500 रानियों के रहने के प्रत्येक को अलग–अलग महल है याने 500 महल है। गगनचुंबी महलों में धनवैभव को सुबाहुकुमार सुखपूर्वक अनासक्त भाव भोगता है। सुबाहुकुमार इतना सुखी है तो उसने पूर्व भव में

कौन सा शुभ कर्म किया ? सुबाहुकुमार के सुख के पीछे कर्म स्वरूप समझाते सुबाहुकुमार का पूर्व भव कहते है।

सुबाहुकुमार पूर्व भव में सूक्ष्म नाम का व्यापारी था। धर्म आराधना–साधना करता है। देवगुरू प्रति हृदय में बहुमान भाव आदरभाव है। एक दिन धर्मघोषसूरीजी महाराजा के शिष्य मासक्षमण के उग्र तपस्वी सुदत्त मुनिराज को मास क्षमण के पारणे हृदय के उछलते उमंगे पडिलाभते है और पुण्यानुबंधी पुण्य उपार्जन करता है। यह पुण्य के फलस्वरूप सुबाहुकुमार इतना सुख वैभव भोगता है। सुबाहुकुमार इतना सुख के बीच भी धर्म आराधना–साधना करते है। व्रत–जप–नियम करते है। पर्व तिथि को पौषधव्रत करते है।

एक दिन सुबाहुकुमार मन में संकल्प करते हैं कि यदि प्रभुवीर पधारेंगे तो उनके पास संयम ग्रहण करूं। पुण्यशाली के पुण्य के प्रभाव से शुभ संकल्प पूर्ण हुआ, प्रभुवीर पधारे और सुबाहुकुमार ने वैराग्य रंग से रंग करके चारित्र जीवन अंगीकार किया।

उच्च चारित्र (संयम) पालन के प्रभाव से वहां से काल करके प्रथम देवलोक मे देव बने फिर 14 भव करके सुख भोगते अन्त में सुबाहुकुमार का आत्मा मोक्ष में जायेगा। इस तरह धर्म की उत्तम आराधना करके इस भव और परभव में सुख को प्राप्त करने वाले आत्मा के जीवन चरित्र का वर्णन किया है।

इस आगम के मूल श्लोक 1250 है, 1,84,32,000 पद है। यहां 11 अंग पूर्ण हुए। 11 अंग के कुल पदे 7,36,10,000 है। आचारांग और सूयगडांग इसी तरहदो आगम की टीका के रचनाकार श्री शीलंकाचार्य महाराजा है और बाकी के 9 अंग की टीका के रचनाकार नवांगी टीकाकार श्री अभयदेवसूरिजी महाराजा है।

(12) श्री औपपातिक सूत्र

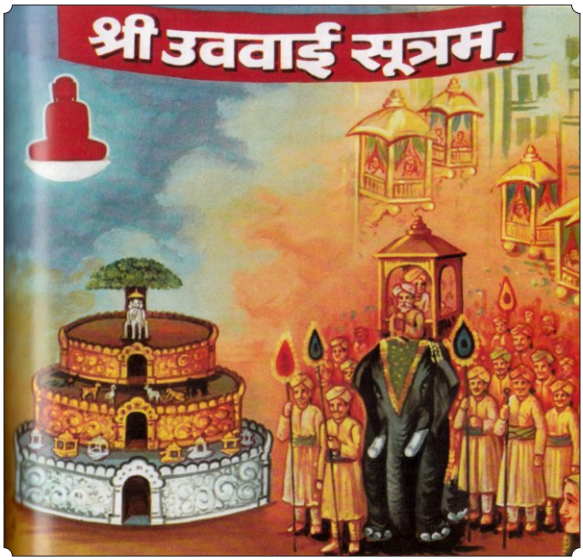

यह सूत्र भी आचरांग सूत्र का उपांग हैं इस सूत्र में चंपानगरी का वर्णन, समुद्रधात का वर्णन, श्रेणिक राजा के पुत्र कोणिक राजा ने किया हुआ प्रभु वीर का भव्यातिभव्य सामैया का हुबहु (आबेहुबा) वर्णन, प्रभु वीर की देशना, गुरू गौतमस्वामी द्वारा पूछे हुए प्रश्न और उसके प्रभु वीर द्वारा दिये हुए उत्तर यह प्रश्नोत्तरी भी यहां वर्णवी है।

14 राजलोक में ऊपर के भाग में 26 स्वर्ग के ऊपर आयी हुई 45 लाख योजन लंबी–चौड़ी 8 योजन जाड़ी बीच में से वाली सिद्धशीला का अद्‌भुत वर्णन है। समचतुःरस्त्र संस्थानवाली स्फटिक रत्न की है। गाय का दूध, खंश से भी अधिक उजली मोतियों के हार समान शोभति है। सिद्धशिला में ग्राम–नगर–देश–पाटन जैसा कुछ भी नहीं। काल–सुकाल वहां होता नहीं। वहां होता नहीं रात–दिन–वर्ष–तिथि–वार–मास एवं काल के कोई समय होता नहीं उर्द्धलोक में आयी हुई इस सिद्धशीला का अलग (साल) बारह नाम है। 8 कर्म का क्षय करके संसार के दुःख से मुक्त बनकर शाश्वत सुख को भोगने वाले अनंत आत्माओं की कायमी रहने की परम पवित्र भूमि

है। सिद्ध भगवंत क्षयिक सम्यक्त्व के धनी होते है। सिद्धात्माओं को भूख का, तृषा का, ठंड का, गर्मी, हर्ष, शोक का, कर्म का, काया का, शब्द–रूप–रस–गंध वेद का लेश मात्र भी दुःख होता नहीं। इन्द्रियों को विषयारस सताते नहीं।

सिद्ध भगवंतों के स्वाधीन, शाश्वत सादि अजरामर, अनंतकाल का सुख होता है सदाय अनुपम सुख में झीलता होते है। अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अव्याबाध सुख, अरूपीपणुं, अगुरू लघु, अक्षय स्थितति, अनंतवीर्य, अनामीपणु (अशरीरीपणु) आत्मा के उच्च गुण के स्वामी होते हें अनंता आत्मायें सिद्ध हुए है। अनंत आत्मायें सिद्ध होगी। अभी वर्तमान में भी सिद्ध होती है फिर भी जग्या रोकते नहीं। ज्योति में ज्योति समा जाये वैसे एक दूसरे में समा जाते है। सिद्धशीला का दूसरा नाम अपवर्ग भी है। जहां पर वर्ग नहीं वह अपवर्ग प्–पाप सिद्धशीला में पापस्थानक ही नहीं। पापबंधन या पाप का भोगवटा भी नही। फ–फंदा–फांसी, जन्म–मरण के दुःख रूपी फांसी नहीं। ब–बंधन, कर्म के बंधन नहीं। सिद्ध के जीव कर्म मुक्त होते है। भ–भय नहीं। इहलोक–परलोक–आदान–प्रदान–अकस्मातः आजीविका–मरण–अपयश इस तरह 7 भय नहीं। म–मृत्यु अजरामर पद प्राप्त होता है। कभी भी मृत्यु पाते नहीं। जन्म से अनेक गुणी ज्यादा वेदना मृत्यु के समय जीव को होती है। शरीर के साड़े तीन करोड़ रोंगटे में एक साथ सुई लगने से जो वेदना होती उससे भी अधिक वेदना मरण समये आत्मा को होती है। ऐसी मरण की पीड़ा सिद्ध के जीवों की होती नहीं।

अंबड़ परिव्राजक और उनके 700 शिष्यों का वर्णन भी बहुत ही बढ़िया बताया है। अंबड़ परिव्राजक को 700 शिष्य थे। 700 शिष्य एक बार कपिलपुर से पुरीमताल जाते थे। धोमधखता (प्रचंडगर्मी) था। सूर्यदेव खुद का तेज फैलाते थे। बहुत ही गर्मी गिरती थी। सभी शिष्यों को तृषा बहुत ही लगी है। इतने में मार्ग भूल गये है। तृषा बहुत लगी है। पानी मिलता नहीं। बहुत ही समतापूर्वक तृषा परिषह सहन करते हैं। श्रमण भगवान महावीरदेव का स्मरण करके अनशन लेकर बहुत ही समाधि सहित प्राण त्याग किये वहां से पांचवे देवलोक में (700 शिष्यों का आत्मा) गयी। वहां से च्यवकर

महाविदेह में जन्म लेकर संयम जीवन अंगीकार करके सफल कर्म का क्षय करके मोक्ष में जायेंगे।

यह सूत्र में श्रमण भगवान महावीर स्वामी का परिवार का स्नेहीजनों का आयुष्य बताया है। सिद्धार्थ राजा का आयुष्य 87 साल, त्रिशला माता आयुष्य–58 वर्ष, ऋषदत्त ब्राह्मण का आयुष्य–100 वर्ष, देवानंदा माता का आयुष्य–105 वर्ष, नंदीवर्धनभाई का आयुष्य–98 वर्ष, सुदर्शना बेन का आयुष्य–85 वर्ष, पुत्री प्रियदर्शना का आयुष्य–85 वर्ष का था। यह आगम के मूलश्लोक 1200 है।

(13) श्री सयमसेणीय सूत्र

श्री सूयगडांग सूत्र का यह उपांग है। केशी गणधर ने गणधर नामकर्म उपार्जन नहीं किया फिर भी वे गणधर के रूप में शासन में पहचाने गये। क्योंकि पार्श्वनाथ प्रभु के समय के शिष्यों में गणनायक पद पर केशी महाराजा थे। इसलिये वे मुख्यता के कारण से केशी गणधर के रूप में पहचाने गये। इस सूत्र में प्रदेशी राजा ने पूछे हुए तात्विक–मार्मिक और तार्किक प्रश्न और केशी गणधर द्वारा दिये जवाब का सुंदर वर्णन है।

प्रदेशी राजा नास्तिक था। उनका चित्रसार नाम का आस्तिक मंत्री था। प्रदेशी राजा नरक गति–देव गति, तिर्यंच गति, आत्मा–आत्मा है तो मर करके कहां जाता ? यह सभी बातें मानते नहीं। एक बार केशी गणधर प्रवचन दे रहे है वहां चित्रसार मंत्री के साथ प्रदेशी राजा भी आया है। वे कहते है कि मेरे दादा नास्तिक थे वे मर करके नरक में गये होंगे। लेकिन अभी तक उनके कोई भी समाचार नहीं। यदि जीव मर करके अन्य जाता हो तो मेरे दादी आस्तिक थे। तो वे मर करके अवश्य स्वर्ग में गये होंगे तो उनका भी कोई समाचार नहीं। इसलिये आत्मा जैसा, गति जैसा कोई भी नहीं। केशी गणधर प्रदेशी राजा को समझाते है कि आपके दादा नास्तिक थे। वे नरक में गये होंगे तो नरक में परमाधामी द्वारा बहुत ही दुःख दिया जाता है। अतिशय दुःख में जीति है। परवशता का जीवन है। इसलिये इधर आते नहीं। जब आपके दादी स्वर्ग में गये है तो स्वर्ग में लोभामणे सुख में आसक्त होंगे। वहां अतिशय सुख में आपकी याद कहां से आये ? इसलिये स्वर्ग के सुख में मशगुल बने (लुभावणी) हुए आपके दादी के कोई समाचार नहीं। जिस तरह अरणिकाष्ठ में अग्नि है लेकिन दिखता नहीं। इसी तरह आत्मा है लेकिन अखपीपणा के लिये दिखता नहीं। प्रदेशी राजा–आप कहते है कि आत्मा है तो आपके हाथ में मेरे को आत्मा बताये।

केशी गणधर–यदि आप अपने हाथ में हवा बताये तो मैं मेरे हाथ में आत्मा दिखा दूं। प्रदेशी राजा ने ऐसे अनेकानेक प्रश्न पूछे और केशी गणधर ने उसके सचोर जवाब दिये और सत्यज्ञान की प्राप्ति होते प्रदेशी राजा जैन शासन के अनुरागी बने। धर्म आराधना–साधना–उपासना करते है। व्रत नियम पच्चक्खाण, जप–तप–ध्यान करते है। दान–शील, तप–भाव ये 4 प्रकार के धर्म का पालन करते है। हृदय में प्रभु का वास है। रोम–रोम मेंप्रभु के वचन पर अदृश्य श्रद्धा है। प्रदेशी राजा के छट्ठ चल रहा है। छट्ठ के पारणे खाने के लिये महल में पधारते है। सूर्यकान्ता पत्नी आज प्रदेशी राजा की द्वेष भाव से वैरी बनी है।

पति को मरण के शरण करने के लिये सोने के कचोले में विष घोला है और रत्न कचोले में राजा को वह कातिल जहर परोसा है। प्रदेशी राजा

चतुर है। विष को पहचान जाते है। लेकिन कर्म के सिद्धांत को जाननेवाले और मानने वाले ऐसे प्रदेशी राजा किसी पर भी आक्षेप नहीं डालते क्षमा को धारण करते हैं। वहां से उठकर पोषधशाला में जाकर आत्मकल्याण करने के लिये एकाएक लोच करके संथारा करते है। परंपरा से बात फैलती–फैलती पूरे राज्य में फैल जाती है। सूर्यकान्ता को भी यह बात खबर लगती है। सूर्यकान्ता भी वहीं आ जाती है। बाहर से दुःख दिखा पति ऊपर पड़ती है और गले के नीचे नख लगाकर प्रदेशी राजा को मौत के घाट उतारती है। प्रदेशी राजा धर्म के प्रभाव से अपूर्व समाधि को धारण करते शुभ ध्यान में मरकर के पहले देवलोक में सूर्याभनाम के देव बने। श्रमण भगवान महावीरदेव समवसरण में बिराजे है। भवि जीवों को भवसागर से तैरानेवाली अमृतमय देशना दे रहे है वहां सूर्याभदेव आते है और प्रभु को विधिपूर्वक भक्ति वंदना करते है।

सुर्याभदेव प्रभु महावीर देव को 6 प्रश्न करते है। प्रभु ! मैं भवी या अभवी ? हे प्रभु ! मैं सम्यग् दृष्टि या मिथ्या दृष्टि। हे प्रभु ! मैं चरमशरीरी या अचरमशरीरी ? हे प्रभु ! मैं सुलभबोधि या दुर्लभबोधि। हे प्रभु ! मेरा परित संसार या अपरित संसार ? तब प्रभु सूर्याभदेव के उत्तर में कहते है कि तू भवि है। तु चरमशरीरी है। तू सम्यग दृष्टि है। तू सुलभ बोधि है। तेरा परित संसार है। प्रभु के मुखकमल में से सभी ही जवाब सकारात्मक मिलते सूर्याभदेव बहुत ही आनंदित हो जाता है। ये हर्ष को व्यक्त करते प्रभु सन्मुख अलग–अलग तरह के 32 नाटक करके प्रभु भक्ति करता है। 32 नाटक करके प्रभु भक्ति करता है। 32 नाटक में अष्टमंगल का आकारवाले अष्टमंत्रा प्रविभक्ति नामक प्रथम नाटक करते है। क–ख–ग–घ आदि 25 अक्षर के नाटक, सूर्योदय–सूर्यास्त, ग्रहण आदि का नृत्य, प्रभु के 5 कल्याण इसी तरह विविध तरह अद्‌भूत नृत्य–नाटक करके प्रभु की भक्ति करते है और प्रभु का महिमा बहाता है।

इस आगम सूत्र में सिद्धायतन की 108 जिन प्रतिमाओं का भी बढ़िया वर्णन है। इस सूत्र के मूल श्लोक 2100 है।

(14) जीवाभिगम सूत्र

श्री स्थानांग सूत्र का श्री जीवाभिगम सूत्र उपांग है। इस सूत्र में देव–मनुष्य–तिर्यंच–नरक इसी तरह चार गति का वर्णन अद्वीप, जंबुद्वीप का वर्णन, नारकी में नारकों के रहने के स्थान 84 लाख नरकावास का वर्णन बताया है। वैमानिक देवों के विमान का भी वर्णन यहां बताया है और नवतत्व–दंडक और जीव और अजीव का विस्तार से वर्णन बताया है। विजय नाम के देव ने भक्ति भरे हृदय से की हुई प्रभु पूजा का अद्‌भुत वर्णन बताया है।

श्री पन्नवणा सूत्र में बताये हुए पदार्थों पर से इस आगम की रचना की है। इस सूत्र के मूल श्लोक 4700 है। इसके ऊपर से 1500 श्लोक प्रमाण चुर्णि और हरिभद्रसूरिजी द्वारा रचित 1192 श्लोक प्रमाण प्रदेश टीका नाम की वृत्ति (टीक) मिलती है।

(15) श्री पन्नवणा सूत्र (प्रज्ञापना)

श्री समवायांग सूत्र का वह उपांग है। इस आगम का दूसरा नाम प्रदुपणा सूत्र है। अन्य नाम प्रज्ञापना सूत्र है। श्री सुधर्मास्वामी महाराजा की 21वीं पाटे आये हुए 10 पूर्वधर उमास्वामीजी महाराज के शिष्य श्यामाचार्य महाराजा ने इस पन्नवणासूत्र की रचना की है।

श्री पन्नवणा सूत्र के विषय अति गहन है। वस्तु द्रव्यानुयोग से भरपूर है। इसमें नवतत्व की प्रदुपणा है। जीवों के प्रकार, 6 लेश्या का स्वरूप, शरीर, अवगाहना, आयुष्य स्वकाय स्थिति, स्त्रियों के मोक्ष का वर्णन, समाधि और लोक का स्वरूप आदि का स्पष्टीकरण से वर्णन किया है।

11 अंग में सबसे बड़ा अंग भगवती सूत्र है, उसी तरह 12 उपांग में सबसे बड़ा उपांग पन्नवणा सूत्र है। श्री भगवती सूत्र को जयकुंजर हाथी की उपमा दी है तो पन्नवणा सूत्र को रत्नों के खजाना की उपमा देकर यह आगमव महिमा बताया है। श्री पन्नवणा को लघु भगवती सूत्र भी कहते हैं।

इस आगम का मूल श्लोक 4454 और हरिभद्रसूरिजी रचित 3728 श्लोक प्रमाण वृत्ति (टीका) मिलती है।

(16) श्री सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र

श्री भगवती सूत्र का यह उपांग है। इस आगम का दूसरा नाम सुर प्रज्ञप्ति भी है। गणितानुयोग से भरपूर यह आगम है। श्री आर्यरक्षितसूरीजी म.सा. ने 45 आगम को द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, चरणकरणानुयोग और धर्मकथानुयोग इस तरह 4 विभाग में विभाजित किया है।

इस ग्रंथ में सूर्य–चंद्र–ग्रह–नक्षत्र–तारा आदि की गति से होते दिन–रात मौसम (ऋतुयें) वगैरह का विस्तृत वर्णन है। अढ़ी द्वीप में चर ज्योतिषचक्र है जब अट्ठी द्वीप की बाहर अचर ज्योतिष चक्र है। जंबुद्वीप में–2, लवण समुद्र में–4, धातकी खंद में–12, कालोदधि समुद्र में 42, अर्धपुष्कर द्वीप में–72 व 132 सूर्य–चंद्र अट्ठीद्वीप में है वे चर है। गतिमान है, उससे दिन–रात मौसम (ऋतुयें) होती है।

इस आगम में ज्योतिष चक्र भी विस्तार से समझाया है। उत्तरायन–दक्षिणायन का वर्णन बताया है। इस आगम का मूल श्लोक 2296 है उसके ऊपर श्री भद्रबाहुस्वामीजी ने रची हुई निर्युक्ति जो अभी उपलब्ध नहीं लेकिन श्री मलयगिरीसूरीजी कृत 9500 श्लोक प्रमाण वृत्ति मिलती है।

(17) श्री जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र

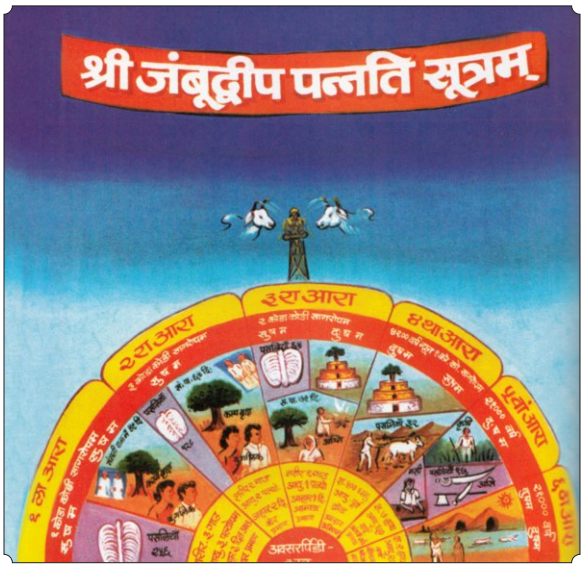

यह ग्रंथ खगोल विषयक है। यह सूत्र गणितानुयोग का विषय है। जंबुद्वीप में आये हुए क्षेत्र, पर्वत, द्रह, नदी, कुंड, किल्ला, जगती, वेदिका, द्वार, द्वार के अधिष्ठायक देव, छह खंडों में बने बपाताल कलश आदि का बहुत ही विस्तार से बढ़िया वर्णन बताया है। लवण समुद्र में आये हुए पाताल कलशे में से वायु के भाग के कारण से पानी बाहर ऊँचे उछलता है। उससे 10 हजार जाड़ी (चौड़ी) 16 हजार ऊंची जलशिखा है।

इस जलशिखा का पानी 1,74,000 वेलधंर–अनुवेलधंर देवों को सतत लवण समुद्र की ओर पीछे करता है। यदि वे देव दूर नहीं करते तो पलक के हायकारे में पूरा जंबुद्वीप में पानी फिरने लगे। श्री सीमंधर स्वामी भगवान, श्री युगमंधर भगवान, श्री बाहुस्वामी भगवान, श्री सुबाहु स्वामी भगवान, ये 4 जिनेश्वर वर्तमान में जंबुद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में विचरते है उनका प्रभाव और केवल भगवंतो, गणधर भगवंतो, मनः पर्यव ज्ञानिओं, महामुनिवरों, व्रतधारिओं और धर्मजनों के धर्म प्रभाव से ये जलशिखा का पानी जंबुद्वीप में प्रवेशता है।

वली यह आगम में अरिहंत परमात्मा का देव द्वार होते जन्माभिषेक का अद्‌भुत वर्णन बताया है। श्री आदिनाथ प्रभु का जीवन चरित्र, नाभिकुलकर आदि कुलकरों का, श्री ऋषभदेव परमात्मा के रहने के लिये कुबेरदेव द्वारा बनाया हुआ 21 मंजिल वाला त्रैलोक्य विभ्रंम नाम का महल का बढ़िया वर्णन है। श्री आदिनाथ प्रभु का पंचकल्याणक का वर्णन अति भक्तिरस भरपूर बताया है।

6 आरा का स्वरूप, नवविधि, मेरू पर्वत, 6 खंड का स्वरूप भरत क्षेत्र का वर्णन में राजा क भी कथा है। इस आगम के मूल श्लोक 4454 है।

(18) श्री चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र

गणितानुयोग से भरपूर यह आगम है। इस आगम में चंद्र का विस्तृत वर्णन है और चंद्र की गति, मंडल, नक्षत्रों, सुदी पक्ष, वदी पक्ष में होती तिथि की वृद्धि और क्षय के कारण वगैरह विस्तार से सचोरपूर्वक है।

यह आगम के मूल श्लोक 2200 है।

(19) निरयावली

श्री अंतगड़ सूत्र का यह श्री निरयावली सूत्र उपांग है। इस आगम में श्री जंबुस्वामी प्रश्न करते है और श्री सुधर्मास्वामी जवाब देते है। प्रश्नोत्तरी इस सूत्र में वर्णन की गई है। इस आगम में कौन–कौन नरक में गये, किस तरह से गये, कैसे कर्म किये या नरक में गये सबका विस्तार से वर्णन है। राजा श्रेणिक के कालीकुमार आदि 10 पुत्र वैशाली नगरी के राजा चेटक जो उनके दादा थे उनके साथ युद्ध करते–करते मरकर नरक में गये उसका वर्णन है। श्रेणिक महाराजा का जीवन चरित्र का वर्णन है। श्रेणिक और चेड़ा राजा के बीच हुआ स्थमुसल और शिलकंटक युद्ध का वर्णन है।

श्रेणिक राजा को पुत्र कोणिक द्वारा दिया हुआ दुःख तालपुट विष मुद्रिक चूसकर श्रेणिक राजा का मृत्यु, इस तरह श्रेणिक राजा का वर्णन संसार की असारता बताता है।

श्रेणिक राजा के बेटे कोणिक और हल्ल–विहल्ल के बीच सेचनक हाथी और 18 सेरा हार के लिये हुए युद्ध के अंत में वैराग्यवासित बनकर हल्ल –विहल्ल संयम अंगीकार करके मोक्ष पद प्राप्त करते है। इस तरह हल्ल–विहल्ल का बढ़िया वर्णन किया है।

(20) श्री कल्पावतंसिका

श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र का यह आगम उपांग है इस आगम का दूसरा नाम कप्पडंसिय सूत्र है। इस आगम में आराधना–साधना करके देवलोक में गये हुए आत्माओं का जीवन चरित्र का वर्णन है।

श्रेणिक राजा के कालकुमार आदि 10 पुत्रों के 10 पुत्र पद्म–महापद्म–भद्र–सुभद्र–पद्मभद्र–पद्मसेन–पद्मगुल्ल–नलिगीगुल्म–आनंद और नंदन आदि 10 पौत्र वैराग्यवासिक होकर संयम जीवन अंगीकार करके आराधना–साधना करके अलग–अलग देवलोक में गये।

पद्मकुमार पदपोगमन अनशन स्वीकार करके पहले देवलोक में गये। वे सब वहीं से च्यवकर महाविदेह में जन्म लेकर संयम जीवन अंगीकार करके सकल कर्म का क्षय करके मोक्ष में जायेंगे। इसका विस्तृत वर्णन है।

(21) पुष्पिका सूत्र

चंद्र, सूर्य, शुक्र बहु पत्रिका देवी–पूर्णभद्र–मणिभद्र, दत्त, शील, बाल और अनाढय के कथानक है। सूर्य, चंद्र, शुक्र पूर्व भव में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के शिष्य थे। चारित्र जीवन अंगीकार करके संयम की अल्प विराधना से देव बने। अंत में महाविदेह होकर मोक्ष में जायेंगे। उसका विस्तार से वर्णन किया है।

श्रमण भगवान श्री महावीर स्वामी गुणसेन नाम के चैत्य में समोसर्या है। वहां खुद के विमान में से पुष्पक नाम के विमान में बैठकर दस देव–देवी प्रभुवीर को वंदन करने आये है। प्रभु भवि जीव को हितकारी देशना श्रवण करा रहे है। प्रभु वीर देशना में आये हुए दस देव–देवी के पूर्वभव श्री गौतम स्वामीजी को बताते है उसका आम सूत्र में विस्तार से वर्णन है।

यहां बहुपत्रिका नाम की देवी का पूर्वभव बताया है। बहुपत्रिका देवी पूर्व

भव में वाराणसी नगरी में भद्रसार्थवाह की पत्नी सुभद्रा नाम की सुश्राविका थी। संसार संबंधी पुद्गल धनवैभव संपत्ति सभी सुख है लेकिन संतान नहीं उसका बहुत दुःख है। साध्वीजी श्री सुव्रता श्रीजी म.सा. अपने श्रमणीवृंद सहित पधारे। वहां सुभद्रा भी वंदन करने जाती है।

एक बार सुभद्रा आर्या सुव्रता श्रीजी को अपना संतान प्राप्ति का उपाय पूछती है तब आर्या कहती है कि हमसे संसार संबंधी कार्य के लिये वह कह नहीं सके और वैराग्यभरी वाणी सुनाते है।

वैराग्य रंग से रंगायी सुभद्रा संयम जीवन अंगीकार करती है लेकिन बालक के प्रति अनहद अनुराग से उपाश्रय में आते बालकों को खेलाती है। यह कार्य संयमी को उचित नहीं। ऐसा गुरूणीजी बार–बार समझाते है। गुरूवर्या सारणा–वारणा–चोयणा–परिचोयणा से वारते है लेकिन बालक के प्रति अत्यंत अनुराग के कारण अनेकबार वारने बाद भी वलते नहीं।

इस विराधना की आलोचना किये बिना अनशन करके काल करके प्रथम देवलोक में 4 पल्योपम के आयुष्यवाली बहुपत्रिका नाम की देवी बनी।

यह देवी वहां से च्यवकर भरतक्षेत्र में बिमेल नगर में सोम ब्राह्मण के वहां पुत्री रूप में जन्म लेगी। युवानवय में आते राष्ट्रकृत के साथ उसकी शादी होगी। पूर्वभव में संतान प्रत्ये के अनहद अनुराग के कारण 16 साल में एक बार एक युगल को जन्म देगी उसी तरह 16 साल में 16 युगल को जन्म देगी और 32 बालक की माँ बनेगी।

वहां भी आर्या सुव्रताश्रीजी म.सा. के पास चारित्र ग्रहण करके पहले देवलोक में देव बनेगी। वहां से च्यवकर महाविदेह में जन्म लेगी। वहीं संयम जीवन अंगीकार करके सकल कर्म का क्षय करके मोक्ष में जायेगी।

(22) पुष्प चूलिका सूत्र

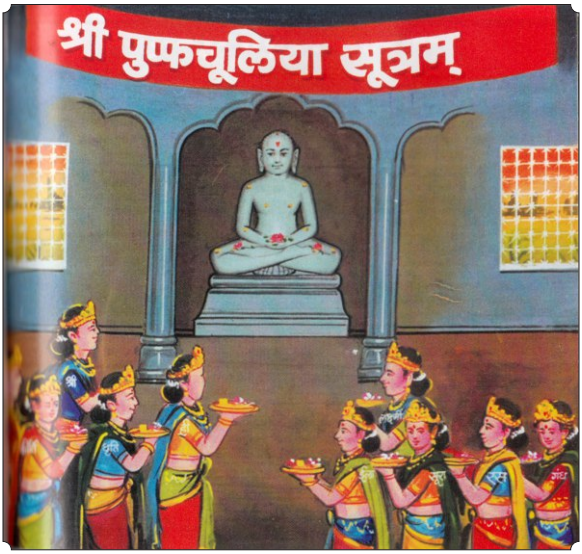

यह विपाक सूत्र उपांग है। इसमें श्री देवी आदि 10 देवियों के पूर्व भवों का वर्णन है। इसमें कुल 10 अध्याय है।

श्री पार्श्वनाथ प्रभु के मुख्य साध्वीजी भगवंत श्री पुष्पचुलाश्रीजी की 10 साध्वीजी थी। संयम जीवन में थोड़े शिथिलाचार के कारण काल करके प्रामि देवलोक में 10 साध्वीजी भगवंत देवी रूपे उत्पन्न होती है। जो अनुक्रम में श्री , धृति, कृति, बुद्धि, लक्ष्मी, इला, सुरा, रस और गंध जो दस देवीओं के नाम है।

यह दस देवियों के पूर्वभव सहित सुंदर कथानक है जिसमें श्री देवी पूर्वभव में भूता नाम की स्त्री थी उसका पूर्वभव भी यहां बताया है।